५४ वां मेरठ कांग्रेस अधिवेशन

लेखक—
अनेक पुस्तकों के रचयिता
श्री कौशल प्रसाद जैन

सोल एजेन्ट—
जय भारत साहित्य मण्डल
२२०६ नई सड़क, देहली

प्रथम संस्करण]   नवम्बर १९४६   [मूल्य १)

प्रकाशक—
आर्य पुस्तक भण्डार
नई सड़क देहली,

राष्ट्रपति कृपलानी जी की नेताजी के प्रति श्रद्धाँजलि

सुभाष बाबू किसी एक पार्टी या गिरोह के नेता नहीं, बल्कि सारे हिन्दुस्तान के नेता हैं, जिसके लिए उन्होंने अबतक काम किया और जिसके लिए आशा है, वह अब तक जीवित हैं। यदि मैं अहिंसा का मानने वाला न होता, तो मैं भी बिल्कुल वही करता, जो सुभाष बाबू ने किया और गर्व के साथ यह कहता कि मैंने वही काम किया है, जो इतिहास के अन्य महापुरुष कर चुके हैं।

—राष्ट्रपति आचार्य कृपलानी

मुद्रक—
राजधानी प्रेस
मोहल्ला दस्सां देहली

1950

पुस्तक के सम्बन्ध में—

इस पुस्तक की तैयारी पूर्व आयोजित या पूर्व निश्चय के अनुसार भी नहीं है, जिस समय मैं मेरठ अधिवेशन में गया तो मुझे यह ख्याल भी नहीं था कि वहां से लौटकर मुझे इस पुस्तक के संकलन में जुट जाना पड़ेगा। पर मेरठ के वातावरण वहां की तैयारी ने मेरे मन पर यह छाप डाली कि वहां जितने व्यक्तियों के आने का प्रबन्ध किया गया था, परिस्थिति वश और विशेषतया दर्शकों को अधिवेशन में शामिल न होने की अनुमति के कारण, तैयारी का दसवां भाग भी जनता मेरठ नहीं आ सकी तो मुझे लगा कि चाहे किसी कारण से भी लोग यहां न आ सके हों यहां की घटनायें, सुनने जानने को उनका दिल अवश्य ही बेचैन होगा। देश के समाचार पत्र समाचार देने का कार्य अवश्य करते हैं पर वह समाचार अलग अलग होने के कारण साधारण पाठक उसका पूरा आभास नहीं ले पाता है। इसके अलावा अधिवेशन में राष्ट्रपति कृपलानी से लेकर अन्य नेताओं के जो भी भाषण हुए हैं वह इतने ठोस, प्रभावक तथा स्थायी भोजनायें लिये हुए हैं कि ऐतिहासिक दृष्टि से उनका बड़ा मूल्य है। वैसे अधिवेशन के दिनों में ही जनता द्वारा पुस्तक विक्रेताओं से कृपलानी जी का भाषण मांगा जाना इस बात का प्रमाण था कि जनता को इन भाषणों की आवश्यकता है।

इन्हीं आवश्यकताओं को दृष्टि में रखकर यह पुस्तक संकलित की गई है पुस्तक में मेरा अपना बहुत थोड़ा भाग है

अधिकांश मैटर दैनिक पत्रों का है और कुछ ऐतिहासिक तथ्य अन्य पुस्तकों के। अतः उन सबके प्रति मैं आभारी हूं। भाई कामताप्रसाद जी पूर्व सम्पादक "नया हिन्दुस्तान" दैनिक का मैं विशेष कृतज्ञ हूं जिन्होंने इस पुस्तक के संकलन में मेरी बड़ी सहायता की है।

पुस्तक छपते समय एक कठिनाई मेरे सामने आई, हिन्दी के प्रसिद्ध लेखक श्री भाई कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' सम्पादक 'विकास' उस दिन सौभाग्य से यहीं थे उन्होंने मेरी सहायता की उन्हें धन्यवाद तो क्या दूं क्योंकि उन पर मेरा अधिकार है।

मास्टर लक्ष्मीनारायण अग्रवाल को क्या लिखूं वह तो मेरे अपने हैं उन्होंने इसकी छपने सम्बन्धी व्यवस्था, ब्लाक और कागज आदि जुटाने में मुझे बड़ा सहयोग दिया है।

पुस्तक कितनी उपादेय है इसका निर्णय मैं अपने उन कृपालु पाठकों पर ही छोड़ता हूं जिनका मुझ पर प्रेम है जो मेरे नाम से ही पुस्तक चाहे अच्छी हो या बुरी खरीद लेते हैं और मुझे सेवा करने का उत्साह देते रहते हैं।

—कौशल प्रसाद जैन

कांग्रेस अधिवेशन की

आवश्यकता

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी का वार्षिक अधिवेशन अपनी विशेष महत्ता रखता है, इस से सारे राष्ट्र को उत्साह, प्रेरणा और कार्यक्रम प्राप्त होता है, सारे देश के कार्य कर्त्ताओं को इकट्ठे बैठकर सामयिक समस्याओं पर सोचने का अवसर मिलता है और उस प्रान्त में जहां कांग्रेस का अधिवेशन होता है रचनात्मक कार्य का व्यवहारिक ज्ञान और कार्यक्रम प्राप्त होता है।

पिछले सात वर्षों से परिस्थिति वश कांग्रेस का यह वार्षिक अधिवेशन कहीं भी नहीं हो पाया है, हालांकि इस बीच में न केवल देश में बल्कि सारे संसार में बड़े बड़े महत्व पूर्ण परिवर्तन हो गये हैं। इसी बीच देश में एशिया की महान् क्रांति अगस्त आन्दोलन हुआ है, जिसने शत्रुओं को कंपा दिया है और राष्ट्र का मस्तक गर्व से ऊँचा रखा है। इसी बीच नेताजी सुभाषचन्द्र के नेतृत्व में भारतीयों ने देश का स्वतंत्र कराने के लिये बिना साधनों के जो युद्ध किया, जो वीरता दिखाई, जो त्याग किया, उसे इतिहास सदियों तक याद रखेगा। इसी बीच हमारे बहुत से वीर साथी देश की आजादी के लिये अत्याचारी का अत्याचार सहते हुये अमर शहीद होगये, मातायें निपूती होगईं, देवियों का सोहाग लुट गया। बहिनों की इज्जत पर

बन आईं, पर राष्ट्र ने आजादी के लिये यह सब कुछ सहा। और अंतमें जब साम्राज्य वादियों ने देखा कि अब इस देश को गुलाम रखना मुश्किल हो नही असम्भव है तो उन्होंने मंत्रि-मिशन भी इसी बीच यहां भेजा। समझौता हुआ और राष्ट्र में प्रथमबार राष्ट्रीय सरकार स्थापित हुई। देश ने गुलामी की बेड़ियां तोड़ डाला और हथकड़िया तोड़ने का प्रयत्न आरम्भ किया। आठ प्रांतों में शासन सूत्र कांग्रेस के हाथ में आया। कार्यकर्ताओं ने शान्ति की सांस ली और कांग्रेस के वार्षिक अधिवेशन की आवश्यकता महसूस होने लगी। बहुत से प्रान्तों ने मांग की पर अन्त में यह सौभाग्य संयुक्त प्रान्त और उसमें भी उस मेरठ शहर को प्राप्त हुआ जिसने १८५७ में प्रथम बार स्वतन्त्रता आन्दोलन का प्रयत्न किया था, विदेशी आक्रान्ता को प्रथम बार गोली का निशाना बनाया था जिसकी छाती पर उन स्वतन्त्रता प्रेमी शहीदों की यादगारों के निशान आज भी मौजूद हैं।

अधिवेशन की तैयारियां

केवल मेरठ डिवीजन के ही नही बल्कि युक्तप्रांतके कार्यकर्त्ता यह निर्णय सुनकर कि उन्हें ही इस वर्ष राष्ट्र का मेजबान होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है उत्साह से झूम उठे। सारे प्रान्त में स्वागत समिति के सदस्य बनने लगे, धनियों ने थैलियों के मुंह खोल दिये कार्यकर्ता और कांग्रेस इंजनीयर सब कुछ भूलकर नगर निर्माण में जुट गये। स्वयं सेवकों की भर्ती होने लगी। चार पांच मील के घेरे में कांग्रेस अधिवेशन की छावनी पड़ गइ, बाजार बनने लगे, नुमायश का स्थान साफ किया गया।

प्रान्त का प्रसिद्ध जल कुण्ड साफ होगया। पंडाल और दरवाजे बनाये जाने लगे। स्वागत समिति ने बीस लाख व्यक्तियों के आने का प्रबन्ध किया। रेलवे अधिकारियों ने मेरठ शहर और छावनी स्टेशन को दस पन्द्रह लाख आदमियों के चढने उतरने योग्य बना दिया। अस्थायी पुल, बुकिंग आफिस, वेटिंग रूम बनाये गये। डाकखाने ने तार घर डाक घर कांग्रेस नगर में खोल दिये बैंकों ने शाखायें खोल दी। यह सब तैयारियां ही हो रही थी कि अचानक तुषारा पात हुआ।

मुस्लिम लीग का एकशन डे

कांग्रेस की सफलता उसको केन्द्र में बढता हुआ प्रभाव और विदेशों में उसका प्रचार और सत्ता ने मुस्लिम लीग और साम्राज्यवादी विचार वाले अंग्रेज सबको घबरा दिया। मुस्लिम लीग ने कांग्रेस, हिन्दुओं, और साथ २ ब्रिटिश मजदूर दली सरकार को भी डराने के लिये १६ तारीख का दिन एक्शनडे मनाने के लिये रक्खा, उस दिन जल्से हों, जुलूस निकलें और कहते हैं कि उसने मुस्लिम लीगियों के पास एक गुप्त सरकुलर भी भेजा जिसमें हिन्दुओं को मारना, लूटना, कत्ल करना, मुसलमान बनाना और उनकी बहिन बेटियों को भगाना भी शामिल था।

भारतवर्ष में और कहीं तो इस एकशनडे प्रोग्राम का फल लीग के हक में नहीं हुआ बंगाल एक ऐसा प्रान्त था जहां मुस्लिम लीगी सरकार थी और उसका प्रधान मंत्री था तानाशाह सुहरावर्दी जो एक दिन में ही पाकिस्तान क़ायम करना चाहता था, हिन्दुओं को उनके देश से निकालना चाहता था अतः

उसने न केवल मुस्लिम जनता को भड़काया, बल्कि गुंडों को सहायता दी, उन्हें सब पार्टियों के नेताओं के मना करने पर भी सार्वजनिक छुट्टी दी, ट्रांसपोर्ट के सारे साधन दिये और चुनांचे कलकत्ते का भयंकर हत्या कांड हुआ। दो दिन वहां के नागरिकों ने इस गुण्डाशाही को बर्दाश्त किया पुलिस की सहायता मांगी। सरकार से रक्षा की प्रार्थना की पर जब उन्होंने देखा कि फल उल्टा ही रहा है तो उन्होंने स्वयं अपनी रक्षा का भार अपने ऊपर उठाया और फिर अत्याचारियों को जो सबक दिया वह बहुत दिन तक याद रखने की वस्तु है सुहरावर्दी साहब परेशान हो गये कहां छब्बे बनने चले थे दुबे रह गये। लीग और मुस्लिम जनता उनसे नाराज होगई तो उन्होंने इसका बदला लेने के लिये नोआखाली और त्रिपुरा नामक ऐसे जिले चुने जहां हिन्दू कुल १२ और २० फीसदी हैं। वहां के मुसलमानों को धर्म के नाम पर भड़काया गया। मुस्लिम लीगी एम० एल० ए० महानुभावों ने हिन्दू संस्कृति के नाश का बीड़ा उठाया। हिन्दुओं के घर लूटे गये उनको पीटा गया, कत्ल किया गया, उनको मां, बहिनों से बलात्कार किया गया जबरदस्ती शादियें की गईं और उन्हें मुसलमान बनाया गया। मुस्लिम लीगी सरकार पड़ी सोती रही, हार पहनती रही चुंकि उनके इशारे पर तो यह सब हो ही रहा था। जब बाहर के नेताओं और पत्रकारोंका ध्यान उस ओर गया और वहांके समाचार आये तो देश स्तब्धत रह गया। हालांकि सरकारने वहांके समाचार देश भरमें न पहुंचे इसलिये पत्रोंपर साम्प्रदायिक समाचार कहकर न छापने का प्रतिबंध भी लगा दिया था। समाचार सुनकर नेता वहां वास्तविक स्थिति जानने और सहायता पहुंचाने

दौड़ पड़ वहां के गुण्डों ने जब यह देखा तो वह भगाई हुई स्त्रियों और जबरदस्ती मुसलमान बनाये हुये परिवारों को वहां से लेकर विहार आदि नजदीक के प्रान्तों में भागने लगे। जब यह लोग विहार आदि पहुंचे तो क्षुब्ध हिन्दू जनता उबल पड़ी और फिर जो कुछ विहार में हुआ वह मुस्लिम लीगी नेताओं के दिलों से पूछने की बात है केवल विहार में ही नहीं अन्य स्थानों पर भी साम्प्रदायिक तनातनी बढ गई और दंगे हुये। मेरठ जिला उसमें कैसे बचता। परिणाम स्वरूप मेरठ, गढमुक्तेश्वर और गाजियाबाद आदि में भयंकर दंगे हुये। सारे देश की स्थिति एक दम खराब हो गई। भाई भाई का दुश्मन होगया किसी की अपनी जिन्दगी का विश्वास न रहा गांधी जी उधर पूर्वी बंगाल मे शांति स्थापित करने मे लगे हुये थे। नेहरू जी, बा० राजेन्द्र प्रसाद और राष्ट्रपति कृपलानी विहार में ठहरे हुये शांति स्थापना कर रहे थे, उधर मेरठ में शांति के लिये २४ घटे का करफ्यू आर्डर लगा हुआ था अतः स्वभाव तया सारा निर्माण कार्य रुक रुग गया। कुछ नेताओं की राय अधिवेशन स्थगित या १ माह हटाने की हुई पर हमारे दृढ़ संकल्प नये राष्ट्रपति कृपलानी ने यह कायरता पसन्द नहीं की और अधिवेशन नियत तिथि पर करने का दृढ निश्चय प्रकट किया। अन्त में यह निश्चय हुआ कि अधिवेशन केवल काम काजी अधिवेशन हो, दर्शकों को आने की अनुमति न हो, प्रदर्शनी न हो, बाजार न लगे केवल प्रति निधि, स्वागत समिति के सदस्य और नेतागण अधिवेशन में सम्मलित न हों और चुनान्चे ऐसा ही हुआ केवल अतिम दो दिन में २५) रुपये वाले दर्शकों को अधिवेशन में आने की स्वीकृति देदी गई थी।

इस सब परिस्थिति के बावजूद भी कांग्रेस ही ऐसी संस्था थी जो ऐसा शानदार और सफल अधिवेशन सम्पन्न करने में सफल हुई। विरोधियों को यह कहने का अवसर नही दिया कि कांग्रेस डर गई या यह लोग विपत्ति के समय सामने आने से डरते हैं। आदि !

मेरठ का महत्व

बहुत प्राचीन काल से मेरठ का नाम इतिहासों पुराणों और शास्त्रों मे चला आया है।

कहावत है कि रावण की पत्नी मंदोदरी के पिता राजा मय ने इसे बसाया था और इसलिये इसका नाम मयराष्ट्र (मय का राष्ट्र) रक्खा गया था जो बाद मे बोल चाल मे मेरठ होगया। एक कहावत यह है कि महा भारत काल मे मय नामक एक महान शिल्पी ने इसे बसाया था। पाण्डुओं ने उसकी कला से प्रसन्न होकर यह उपजाऊ इलाका उसे पारितोषिक मे दिया था। इसी जिले मे स्थित परीक्षित गढ कस्बा जो अभि मन्यु के पुत्र के नाम पर कहते हैं बसाया गया है, और हस्तिनापुर का क्षेत्र यह अवश्य बताता है कि पाण्डवों का इस स्थान से घनिष्ट सम्बन्ध अवश्य रहा है। वैसे हस्तिनापुर मे अब कोई ऐति-हासिक वस्तु नही रह गई है सिवाय इसके कि जैनियों के कुछ मन्दिर धर्म शालायें और विदुर टीले के नाम से एक टीला पड़ा हुआ है। जैन लोग हस्तिनापुर मे अपने तीन तीर्थंकरों का जन्म मानते हैं और इसलिये वह इसको अपना तीर्थ समझ कर यहां पूजा करते हैं और हर साल मेला लगाते हैं सच पूछा जाये तो उन्ही के कारण इस प्राचीन स्थान का नाम किसी न किसी रूप मे बाकी है।

ऐतिहासिक युग में भी हमें मेरट का नाम वहां पर मिलता है, सम्राट अशोक का ऐतिहासिक स्तम्भ जो अब दिल्ली के किले में स्थित है मेरठ में ही स्थापित किया गया था, जिसे १२०६ में फिरोजशाह तुगलक मेरठ से उठा ले गया था। यहां की जामा मस्जिद के पास खुदाई में बौद्ध मठ के और भी ध्वसावशेष प्राप्त हुए हैं जिनसे मालूम होता है कि यहां बौद्ध लोगों का काफी प्रभाव रहा है। मुसलमानों के मेरठ पर समय समय पर कई आक्रमण हुए जिनमें से ११९१ में मोहम्मद गोरी के सेनापति कुतुबुद्दीन का आक्रमण और १३९८ में तैमूर का हमला प्रसिद्ध है।

पानीपत की पहिली लड़ाई के बाद मेरठ मुगलों के हाथ में रहा पर हुमायूं के पतन के बाद वह शेरशाह के हाथ में चला गया। उसके बाद फिर अकबर के समय में वह मुगलों के पास रहा। अकबर ने तांबे के सिक्के ढालने के लिए यहां एक टकसाल खोल रखी थी। इसके अलावा शाही परिवार के लोग और शाही अधिकारी आराम, तफरीह और शिकार के लिये मेरठ आया करते थे।

औरंगजेब के बाद जब सारे देश में अराजकता फैली तो मेरठ भी उससे न बचा और इसे भी सिखों और जाटों आदि के हमलों का शिकार होना पड़ा। इस अराजकता के समय एक गोरे फौजी अफसर वाल्टर रेनआर्ड ने अवसर देखकर इस पर कब्जा कर लिया और हिन्दुस्तानियों का सहयोग अपने साथ रखने के ख्याल से अरब वंश की बेगम सिमरु नामक एक नर्तकी से शादी करली। पर जब सन्धि के अनुसार १८०३ में

मरहठों ने मेरठ की भूमि अंग्रेजों के सुपुर्द करदी तो बेगम समरु ने भी नई सरकार का आधिपत्य स्वीकार कर लिया।

मेरठ से विद्रोह का आरंभ

१८५७ में जब देश ने फिर एक बार गुलामी का तौक उतार फेंकने के लिये प्रयत्न किया तो उसका आरम्भ मेरठ से ही हुआ और यहीं सबसे पहले आंदोलन का सिंहनाद फूंका गया ९ मई १८५७ को तीसरी बंगाल पल्टन के घुड़ सवारों का चर्बी के कारतूस लेने से इन्कार कर देने पर कार्ट मार्शल किया गया था। इसके विरोध में दूसरे दिन उनके अन्य साथियों ने भी बगावत का झण्डा ऊंचा कर दिया। बागियों ने जेल पर हमला करके पहिले उसे तोड़ा और अपने साथियों को छुड़ाकर "दिल्ली चलो का नारा बुलन्द कर दिया।"

उसी ऐतिहासिक जेल के स्थान पर

आज कांग्रेस का अधिवेशन उसी स्थल पर हो रहा है जहां वह ऐतिहासिक जेल स्थित थी और जिस मैदान में पहिली बार हमारे वीरों ने दिल्ली चलो का नारा उच्च किया था। यहीं पर वह क्रांति का स्मारक था जिसे ब्रिटिश गवर्नमेण्ट ने नष्ट कर दिया है।

उसके बाद बीसवी सदी के आरम्भ में देश ने स्वतन्त्रता आंदोलन का दूसरा तरीका इस्तेमाल किया। मेरठ ने उसमें भी पूरा भाग लिया। १९१४ में कुछ उत्साही युवकों ने अंगरेजों को जो उस समय योरुप की लड़ाई में व्यस्त थे भारत से बाहर निकालने के लिये देश व्यापी योजना बनाई। इस योजना का महत्वपूर्ण अंग सारे भारत की छावनियों को बारूद से उड़ा देना
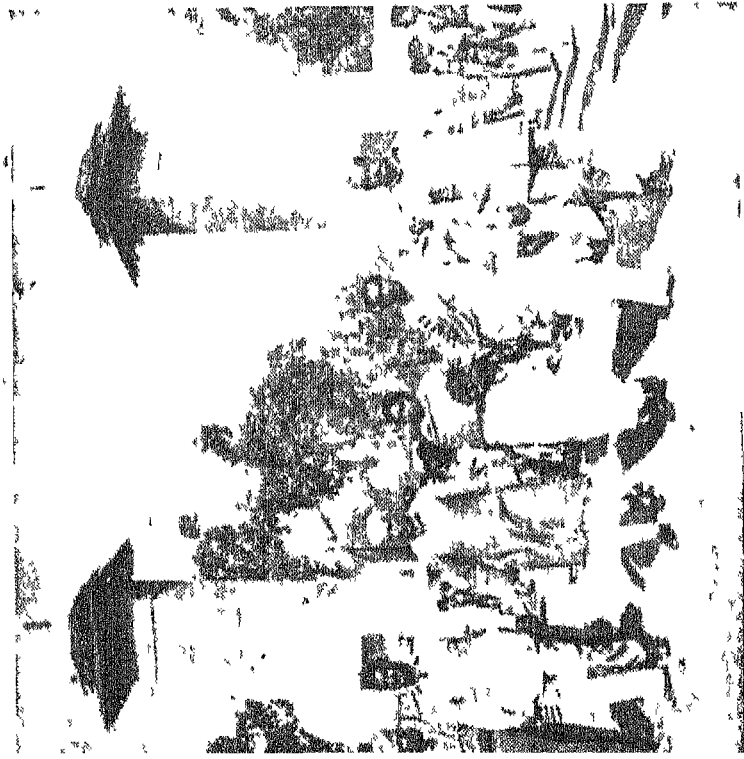
प्यारे लाल नगर में प्रविष्ट होते हुए राष्ट्रपति कृपलानी, पं० नेहरू और

राष्ट्रपिता महामना मालवीय जी
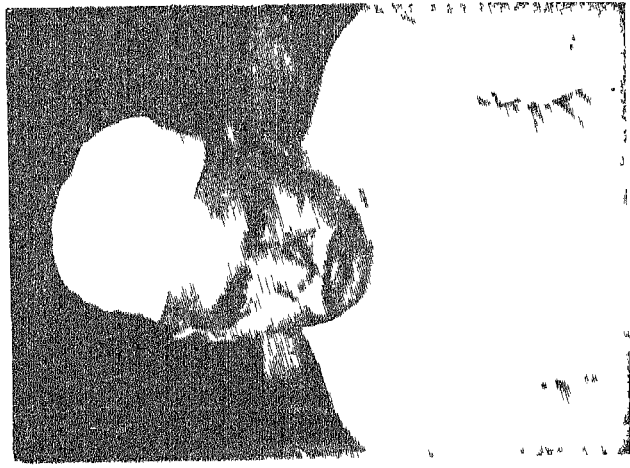
लौह पुरुष सरदार पटेल
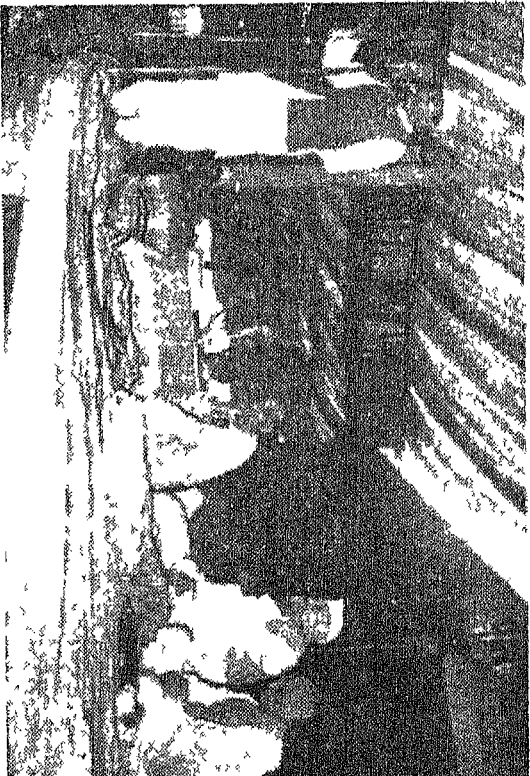
विषय निर्वाचिनी समिति में मंच का एक दृश्य

था। मेरठ छावनी को नष्ट करने की योजना बनाई गई थी। मेरठ का कार्य भार विष्णु देव पिंगले को सौंपा गया था। परन्तु दुर्भाग्य से योजना पूरी करने से पहिले गिरफ्तार कर लिये गये। उन्होंने जिस विस्फोटक द्रव्य का उपयोग करने का विचार किया था उसके सम्बन्ध में विशेषज्ञों की राय थी कि वह आधी छावनी को उड़ा देने में समर्थ था।

देश में फिर असहयोग आंदोलन युग आया मेरठ ने उसमें भी पूरा भाग लिया और अपने यहां से पं० प्यारेलाल शर्मा जैसा निर्भीक परिश्रमी और योग्य नेता राष्ट्र को भेंट किया। जो १६२० से लेकर १६४२ तक बराबर राष्ट्र के हर त्याग बलिदान और कार्यों में आगे रहे। १६४० में जब गांधी जी के व्यक्तिगत सत्याग्रह में जेल गये और वहीं उनका स्वर्गवास हो गया।

मेरठ से सम्बधित एक और महत्वपूर्ण घटना १६३० का मेरठ षडयंत्र केस है जिसने सारे ससार में हलचल मचादी थी।

उसके बाद १६४२ की लड़ाई में भी मेरठ ने अपना पूरा भाग अदा किया, मुवाना, हापुड़, भग्बोरा में जो काण्ड हुए हैं उनको याद कर आज भी रोमांच हो जाता है।

यहां के दर्शनीय स्थानों मे हस्तिनागपुर पीक्षित गढ़ और मेरठ छावनी में स्थित बलेश्वरनाथ का मन्दिर है जिसके बारे में यह प्रसिद्ध है कि यह मन्दोदरी के पिता ने बनवाया था और राजा मय और मदोदरी इस मंदिर में पूजन करने आया करते थे। जामा मस्जिद १०१६ में महमूद गजनवी के वजीर हसन मेंहदी ने बनवाई थी पीछे हुमायूं ने उसकी मरम्मत कराई।

कुछ पुराने मशहूर मकबरे, गदर के जमाने की गोरों की कबरें भी देखने योग्य हैं। सूरज कुण्ड नामक महान जलाशय, जिसके किनारे अधिवेशन हो रहा है, भी देखने योग्य स्थान है।

इस प्रकार ऐसे ऐतिहासिक स्थान पर कांग्रेस का यह अधिवेशन हो रहा है।

प्यारेलाल नगर की झांकी

भारतवर्ष के प्रसिद्ध एतिहासिक नगर मेरठ शहर से तकरीबन १॥ मील की दूरी पर उत्तर पूर्व में नौचन्दी, सूरजकुण्ड, कालेज प्ले ग्राउन्ड आदि मैदानों को मिलाकर एक विशाल घेरे के अन्दर प्यारेलाल नगर बसाया गया था, पं० प्यारेलाल शर्मा जिनके नाम पर इस नगर का नाम रखा गया था शहर के प्रमुख नागरिक, राष्ट्रीय के स्वातंत्र युद्ध के अनथक योद्धा, युक्त प्रान्तीय कांग्रेस सरकार के शिक्षा मन्त्री थे, जिन्होंने अपना अंतिम सांस, आजादी की लड़ाई लड़ते हुए नोकर शाही को मेहमान खाने जेल में ही ली।

प्यारेलाल नगर के तीन मुख्य प्रवेश द्वार थे तीनों ही प्रवेश द्वारों के खम्भों पर बंगाली कलाकार प्रभाष ने ५ सजीव कला पूर्ण चित्र बनाये थे। सब से प्रमुख प्रवेश द्वार, जो गवर्नमेंट सर्किट हाऊस के दाहिनी ओर बनाया गया था, में घुसते ही दाहिनीओ प० प्यारेलाल शर्मा की उस भव्य मूर्ति के दर्शन होते थे जो उनकी राष्ट्रीय सेवाओं के प्रमाण स्वरूप स्थायी रूप से इस मैदान मे स्थापित की गई है और जिसका उद्‌घाटन २५ नवम्बर को पं० जवाहरलाल नेहरू के हाथों हुआ है। मूर्ति के पीछे विशाल झण्डा चौक है और बाईं ओर पंडाल। झण्डा चौक में १२ फुट ऊंचे गोल कटनी दार चबूतरे पर ५५ फुट ऊंचे पोल पर तिरंगा झण्डा लहरा रहा था जो रात्रि के समय

पोल और उसके चारों ओर असंख्य बत्तियों से जगमगा उठता था।

सिंह द्वार के एक ओर हंसिया हाथ मे लिये हुये खड़े देहाती हिन्दुस्तानी के मुख की कठोर और दृढ़ मुद्रा और दाईं ओर मचल कर माता के पांव मे चिपटते हुए शिशु के चित्रों में कलाकार ने आजाद हिन्दुस्तान की रूपरेखा का भाव पूर्ण और प्रभाव उत्पादक खाका खींचा है।

सिंह द्वार से १०० गज दूरी पर एक विशाल पंडाल बनाया गया था जिसमें लगभग दस हजार आदमी बैठ सकते थे। मंच ऊंचा और अत्यन्त सादगी से बनाया गया था जिस पर बैठने के लिये गावतकिये का प्रबन्ध था, कालीन बिछे हुये थे ऊपर का चन्दोआ तिरंगे झण्डे से सजाया गया था। दाहिनी ओर काफी ऊंची व्यास पाठिका थी जिस पर चढ़कर वक्ता बोलते थे। मंच के ठीक सामने दाईं तरफ प्रेस गेलरी थी जहां लिखने के लिये डेस्कों का प्रबन्ध था। उसके बाद बाईं दाईं ओर प्रति निधियों और विशेष व्यक्तियों के बैठने के स्थान हैं सामने २५) वाले दर्शकों के बैठने का स्थान है। सारा पण्डाल ऊपर से ढका हुआ है और खम्भों पर तिरंगे वेष्टन मढे हुये हैं बाहर जाने के आठ रास्ते हैं जिन पर भी तिरंगे झण्डे लगाकर चिन्हित किया गया है। पण्डाल के प्रवेश द्वार का नाम सुभाष गेट है जिस पर उनका चित्र, नाम, और जयहिन्द लिखा हुआ है।

पंडाल से निकलते ही एक बडे चतुर्भुज स्थान में तम्बुओं और चटाइयों से चतुर्भुजाकार कमरे बनाये गये हैं जिनमें स्वागत समिति के विभिन्न दफ्तर हैं दाईं ओर स्वागत समिति

का अर्थ विभाग है। इससे आगे ए० आई० सी०सी० के दफ्तर, श्री मृदुला साराभाई जनरल सक्रेटरी का दफ्तर, प्रकाशन विभाग, विदेशी विभाग आदि अनेक दफ्तर हैं, यहां से समकोण में स्वागताध्यक्ष, स्वागत मन्त्री आदि के दफ्तर हैं। इनके ठीक सामने, अ.ई० एन० ए० स्वयं सेवक विभाग, ट्रांसपोर्ट विभाग, फूड़ विभाग, आदि के दफ्तर हैं। उससे आगे छोटा सा बाजार है जिसमें पुस्तकों, पानों, खाने और चाय के पेय प्रद हैं।

पंडाल के उत्तर की ओर प्रतिनिधियों के ठहरने की जगह जिनमें युक्त प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी का तिरंगे झण्डों से सजा हुआ कैम्प सब से आगे चमकता है।

दाहिनी ओर बिजली का एक कुआ है जो प्यारेलाल नगर के लिये विशेष में बनाये गये चार कुओं मे से एक है।

पास ही नेताओं के ठहरने के कैम्प लगे हुये हैं, जिनके सामने की ओर नेताओं के खाने पीने की व्यवस्था है। इन्ही कैम्पों के दाहिनी ओर डाक घर तार घर की व्यवस्था है। स्वागत समिति के दफ्तर के पास ही भारत बैंक, हिन्दुस्तान कमर्शियल आदि बैंकों ने अपनी शाखायें खोल रखी हैं।

यह सब जो ऊपर बतलाया गया है उस बड़ी योजना का एक छोटा भाग है जो प्यारेलाल नगरके लिये बनाई गई थी और जो देश की साम्प्रदायिक स्थिति खराब हो जाने कारण अधबनी पड़ी हुई है यदि वह पूर्ण होती तो झण्डा चौक के ठीक उत्तर की ओर जो विशाल मैदान दृष्टि गोचर हो रहा है वहां पंडाल होता उसके उत्तर पूर्व में १ मील लम्बा बाजार होता जो

गान्धी आश्रम की जमीन से जाकर मिल जाता और जिसमें नौचन्दी मेले की स्थायी बनी हुई दुकाने भी काम आजाती।

यह पंडाल जिसमें अब अधिवेशन हुआ है केवल ऑल इंडिया कांग्रेस कमेटी और विषय निर्वाचनी समितिओं के काम आता।

आज जहां यह छोटा सा बाजार दिखाई देता है वहां प्रद-र्शिनी होती। बाजार से उत्तर पूर्व की ओर आजाद हिन्द फौज, और स्वयं सेवकों के ठहरने के स्थान और स्वयं सेविकाओं के निवास गृह हैं।

सिंह द्वार के बाहर की ओर पास ही मोटरों और तांगों के स्थान जहां से प्रत्येक समय शहर और स्टेशन को सवारी प्राप्त है। नगर के प्रवेश द्वार के बाहर बिना पास वाले तांगे खड़े रहते हैं। झण्डे चौक के पूर्व की ओर सूरज कुण्ड की नाम का इस प्रान्त का सब से बड़ा पक्का जलाशय जिसको विशेष तौर पर मरम्मत करके जल भरवाया गया है और उसके चारों ओर की बांऊड्री जाली दार बनवा कर किनारों पर दर्शकों के बैठने के लिये बैंचें बनाई गई हैं। जलाशय के बीचों बीच एक गोलाकार चबूतरे पर तिरंगा झण्डा लहराता है। गांधी आश्रम के पास महात्माजी की कुटिया और प्रार्थना स्थान बनाया गया है जो उनके न पधारने पर सूना पड़ा हुआ है।

कांग्रेस नगर की चहल पहल

प्यारेलाल नगर के प्रवेश द्वार में घुसते ही दर्शक समझता है कि मैं मध्य युग की किसी प्राचीन यज्ञशाला में आ गया हूं। वहां से दिखाई देने वाले द्वारों के गुम्बुज और उनके ढंग

सहसा हमें तपोवन की याद दिलाते हैं। द्वार पर खद्दर की वर्दी पहिने हुए स्वयं सेवक, नरमा की सलवारें सफेद पेटी और नरमा की कुर्त्ती तथा सिर पर टोपी लगाये हुए इधर से उधर घूमती हुई सुकुमारी बालिकायें देव कन्याओं का दृश्य उपस्थित करती हैं। सुन्दरियां रंग के कमीज और पायजामे पहिने हुए कुल्ले लगाये हुए लाल कुर्ती दल के पठान स्वयं सेवक दृढता और नियंत्रण की साक्षात मूर्ति से राम की वानर सेना को मात करती हैं। कभी-कभी चमक पड़ने वाले आजाद हिन्द के जवान अपने त्याग और बलिदान की बात मानो अपने मुंह से कहते हैं।

खद्दर की सफेद टोपियां और वस्त्र हर प्रान्त के व्यक्तियों के शरीरों पर पड़ी हुई ऐसी मालूम होती है मानो देश के ऋषियों का सम्मेलन हो रहा है जिनकी वेश भूषा तो एक है पर वह बिभिन्न प्रान्तों और जातियों के हैं पर राष्ट्रीयता के नाम पर वह सब एक मत हैं, एक संगठन में हैं और एक ध्येय उनके सामने हैं।

वैसे देश की साम्प्रदायिक स्थिति ठीक न होने पर इस विशाल अधिवेशन को केवल काम काजी रूप दे दिया गया था और दर्शकों की मनाही कर दी गई थी अतः दूर से आने वाले कोई भी बन्धु नहीं पधार सके थे तो भी दोनों दिन काफी चहल पहल रही अन्तिम दिन तो शायद बीस पच्चीस हजार आदमी इकट्ठा हो गया था।

कांग्रेस-नगर में ६००० नागरिक स्वयं सेवक १००० आजाद फौज के सैनिक और २०० स्वयं सेविकाएं प्रबन्ध में व्यस्त थीं।

राष्ट्रपति का कांग्रेस नगर

में आगमन

मेरठ २१ नवम्बर। मनोनीत राष्ट्रपति आचार्य जे० बी० कृपलानी तथा प० जवाहरलाल नेहरू अन्य कांग्रेस नेताओं के साथ आज प्रातःकाल कार से यहां आगये। स्वागत समिति के सदस्यों, आजाद हिन्द सेना के सैनिकों तथा उपस्थित प्रतिनिधियों ने उनका अनियमित किन्तु शानदार स्वागत किया।

आगामी २३ नवम्बर को प्रातःकाल आचार्य कृपलानी प्यारेलाल नगर में झण्डोतोलन की रस्म अदा करेंगे।

सरदार वल्लभ भाई पटेल तथा श्री सी० राजगोपालाचार्य भी मेरठ पहुंच गये हैं।

प्यारेलाल नगर के सामने झण्डे के बांस के पास स्वयंसेवकों ने आचार्य कृपलानी का स्वागत किया। लालकुर्ती दल के स्वयंसेवकों ने भी समारोह में भाग लिया।

अनेक कठिनाइयों के बावजूद भी अखिल भारतीय कांग्रेस समिति के खुले अधिवेशन की तैयारियां पूर्ण हो गयी हैं। प्यारेलाल नगर में अब जीवन का संचार हो रहा है। खुला अधिवेशन विषय समिति के पंडाल में ही होगा। इसमें केवल प्रतिनिधि, असेम्बलियों के सदस्य तथा कुछ कार्यकर्ता भाग लेंगे।

पण्डाल में लगभग २० हजार व्यक्तियों के बैठने की व्यवस्था है। इसमें २ हजार प्रतिनिधि, ४ हजार स्वागत समिति के

सदस्य, ४०० प्रेस प्रतिनिधि तथा १००० कार्यकर्ता उपस्थित होंगे।

लालकुर्ती दल के १५० स्वयं सेवकों के साथ सीमांत गांधी खां अब्दुल गफ्फार खां २० नवम्बर को मेरठ पहुंच गये थे। कांग्रेस अधिवेशन के अवसर पर किये जाने वाले समस्त सम्मेलन स्थगित कर दिये गये हैं। समुद्र पार के भारतीयों का जो सम्मेलन होने वाला था वह भी स्थगित कर दिया है किन्तु इसमें भाग लेने के उद्देश्य से विदेशों से जो व्यक्ति यहां आये हैं उनमें श्री ए० डी० पटेल एम० एस० सी० (फौजी) का नाम उल्लेखनीय है।

कल तीसरे पहर मेरठ शहर पर विमान से पर्चे गिराये गये इन पर्चों द्वारा पं० जवाहरलाल नेहरू, सरदार वल्लभ भाई पटेल, मि० लियाकत अली खां सरदार अब्दुलरबनिश्तर ने जनता से पारस्परिक मतभेद मिटाने एवं झगड़े दूर करने की अपील की है। मि० जिन्ना की अपील का भी इन पर्चों में हवाला दिया है।

पंडाल में 'गांधी द्वार', 'नेताजी द्वार' तथा 'रवीन्द्रनाथ टैगोर द्वार' बनाये गये हैं। पंडाल के मुख्य द्वार में हिन्दू तथा मुस्लिम निर्माण कला का समावेश है। विषय समिति का पंडाल रंगीन खादी से सजाया जा रहा है।

विषय निर्वाचिनी समिति

आरम्भ

प्यारेलाल नगर, (मेरठ) २१ नवम्बर। जिस नगर में, १८५७ में हिन्दुओं और मुसलमानों ने एक साथ मिलकर अपनी पराधीनता की शृंखला को तोड़ने का प्रथम प्रयत्न किया था तथा उसकी याद देशप्रेमियों के हृदय में अमर है, उसी नगर में आज भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के ५४ वें अधिवेशन की प्रारम्भिक कार्यवाही आरम्भ हुई।

दोपहर बाद विषय निर्वाचिनी समिति का अधिवेशन ३। बजे बड़े ही सादा वायुमण्डल में आरम्भ हुआ। पण्डाल में पूर्ण रूप से सादगी थी। आज के अधिवेशन में लगभग ४० प्रतिशत प्रतिनिधि उपस्थित थे। स्वागत समिति के सदस्यों को छोड़कर दर्शकों की संख्या बहुत ही कम थी। पंडाल को देखते ही देश व्यापी भयंकर स्थिति का चित्र आंखों के सामने नाचने लगता था।

अधिवेशन का कार्य बन्दे मातरम् गान से आरम्भ हुआ। पुरानी प्रथा के अनुसार निर्वाचित अध्यक्ष पंडाल में जलूस के साथ नहीं लाये गये। प्रमुख नेताओं के पहुंचने पर करतल ध्वनि नहीं की गई।

पंडित जवाहरलाल नेहरू ने अधिवेशन का कार्य आरम्भ किया और आचार्य कृपलानी को अध्यक्ष पद का भार करतल

ध्वनि के बीच सौंपा। नये अध्यक्ष को पुष्प माला पहनाई गयी। सरदार बल्लभ भाई पटेल ने पण्डित नेहरू और आचार्य कृपलानी की प्रशंसा में एक छोटा सा भाषण दिया।

परम्परा के अनुसार अखिल भारतीय कांग्रेस महा समिति का अधिवेशन पहले होना चाहिये था परन्तु मन्त्रियों की रिपोर्ट सदस्यों में वितरित न हो सकने के कारण कार्यक्रम बदलना पड़ा। पण्डित जी ने कहा कि महासमिति की बैठक कल आरंभ होगी।

इन सब कार्यवाही के बाद अध्यक्ष की ओर से महामना पंडित मोहन मालवीय, श्री भूलाभाई देसाई, श्रीमती कस्तूरबा गांधी, श्री महादेव देसाई, बेगम अबुल कलाम आजाद, सर विजय राघवाचार्य, श्री सत्यमूर्ति और अल्लाबख्श आदि के सम्बन्ध में रखा गया शोक प्रस्ताव स्वीकार हुआ।

अपने आरंभिक भाषणमें आचार्य कृपलानीने कहा कि विषय निर्धारिणी समिति की बैठक ६ साल बाद हो रही है। इस बीच संसार में महान परिवर्तन हो गये। हिन्द स्वतन्त्रता की ओर प्रगति करते हुए एक महत्वपूर्ण स्थिति पर आ पहुँचा है। पूर्ववर्ती अध्यक्षों से अपनी लघुता को स्वीकार कर गत १२ वर्ष के दीर्घ काल से दिये गये सहयोग पर विश्वास करते हुए आपने महान भार को वहन करने की आशा प्रकट की।

अस्थायी सरकार के निर्माण आदि के सम्बन्ध में कार्यसमिति और महासमिति द्वारा गत अवसरों पर किये गये निर्णयों की स्वीकृति देने विषयक प्रस्ताव को मौलाना अबुल कलाम आजाद ने रखा और पंडित गोविन्द बल्लभ पन्त ने समर्थन किया। इस प्रस्ताव पर जोरदार बहस रही। सर्व श्री अच्युत पटवर्द्धन,

स्वामी सहजानन्द और अशोक मेहता आदि ने घोर विरोध किया। विरोध करने वाले सदस्यों ने कहा कि हमारे विरोध का अर्थ यह नहीं कि अस्थायी सरकार के कांग्रेसी सदस्यों में हमारा विश्वास नहीं है, लेकिन हम तो नयी सरकार की नीति और विशेष कर साम्प्रदायिक स्थिति के सम्बन्ध में अपनायी गयी नीति के घोर विरोधी हैं। कुछ वक्ताओं ने कांग्रेसी सदस्यों से त्यागपत्र दे देने तक की मांग की।

प्रस्ताव बहुमत से स्वीकार हो गया। केवल ३० मत विरोध में रहे। अनेक संशोधन पेश हुए परन्तु बाद में सब वापस ले लिये गये।

पंडित नेहरू का वह प्रस्ताव सर्व सम्मति से स्वीकार हुआ जिसमें कांग्रेस का उद्देश्य भारत में स्वतन्त्र सार्वभौमिक सत्ता प्राप्त प्रजातन्त्र स्थापित करना माना गया है। दक्षिण अफ्रीका में चलने वाले सत्याग्रह आन्दोलन के लिये प्रवासी भारतीयों को बधाई, पूर्वी अफ्रीका में भारतीयों पर प्रतिबन्ध लगाने के विरोध में और हिन्देशिया के नवीन प्रजातन्त्र को उनकी सफलता पर बधाई के प्रस्ताव स्वीकृत हुए।

विषय समिति में पं० नेहरू

का भाषण

प्यारेलाल नगर [मेरठ] २१ नवम्बर पं० जवाहरलाल नेहरू ने विषय समिति में भाषण देते हुए आज बताया कि अन्तः-कालीन सरकार में मुस्लिम लीग के आजाने से वातावरण इतना तनातनीपूर्ण हो गया है कि अन्तःकालीन सरकार के कांग्रेसी मन्त्री दोबार त्यागपत्र देने की धमकी दे चुके हैं।

पं० नेहरू ने कहा; "हमारा धैर्य्य बहुत तेजी से चरम सीमा की ओर जा रहा है। यदि यह चीजें जारी रहीं तो बड़े पैमाने पर एक संघर्ष का होना अनिवार्य है।

पं० नेहरू ने कहा, वायसराय ने अन्तःकालीन सरकार को जिस भावना से शुरू किया था, उसी भावना से उसे चला रहने में वह असफल रहे हैं। वे अब धीमे-धीमे गाड़ी के पहिये उतारते जा रहे हैं जिससे गाड़ी का चलना एक बड़ी नाजुक हालत में पहुंच गया है। जिस दिन से मुस्लिमलीग अन्तःकालीन सरकार में प्रविष्ट हुई है तभी से वह ब्रिटेन का समर्थन पाने के लक्ष्य पर चलती रही है। मैंने एक बार मि० जिन्ना को लिखा भी था कि कांग्रेस और मुस्लिमलीग के मतभेद वाइसराय के हस्तक्षेप के बिना आपस में ही सुलझा लिए जाने चाहिये। मि० जिन्ना ने इस सुझाव को अधिकृत तौर पर अस्वीकार नहीं किया किन्तु जब से मुस्लिमलीग अन्तःकालीन सरकार में प्रविष्ट

हुई है तभी से वह अपने आपको "बादशाह की पार्टी" समझती रही है और अपने स्वार्थ साधन के लिए ही अपने पद-ग्रहण का उपयोग करती रही है।

विधान-परिषद् का उल्लेख करते हुए पं० नेहरू ने कहा कि यदि मुस्लिमलीग १६ मई के प्रस्तावों को स्वीकार नहीं करेगी तो उसके प्रतिनिधियों के लिए अन्तःकालीन सरकार में कोई स्थान नहीं रहेगा। हम विधान-परिषद् में आने पर मुस्लिमलीग का खुशी से स्वागत करेंगे किन्तु मैं यह स्पष्ट करदूं कि मुस्लिम लीग विधान-परिषद् में आये या बाहर रहे, हम विधान-परिषद् में अपना काम जारी रखेंगे। मैं इस विधान-परिषद् का कोई बड़ा शौकीन नहीं हूं किन्तु चूंकि हम इसे स्वीकार कर चुके हैं अतः हमें इसका अधिकतम लाभ उठाना है। यह विधान-परिषद् आखिरी विधान-परिषद् नहीं है, सम्भव है हमें पर्याप्त आजादी मिल जाने पर फिर नई विधान-परिषद् बुलाई जाय। इस विधान-परिषद् में तो एक ही विशेषता है कि इसमें ब्रिटिश सरकार का सीधा प्रतिनिधित्व नहीं होगा फिर चाहे हम उस पर ब्रिटिश सरकार के गुप्त रीति से डाले गये प्रभाव को नहीं रोक सकें।

पं० नेहरू ने फिर कहा कि "हम इस विधान-परिषद् में मामूली-मामूली बातों पर लड़ने नहीं, बल्कि भारतीय जनतंत्र की स्थापना के उद्देश्य से जायेंगे।"

पं० नेहरू ने मि० जिन्ना की विधान-परिषद् को अनिश्चित काल के लिए स्थगित करने की मांग का विरोध करते हुए कहा कि पांच महीने के लिए स्थगित करने के मानी यह होंगे कि विधान-परिषद् कभी हो ही नहीं सकेगी।

पं० नेहरू ने यह भाषण विषय-समिति में उस प्रस्ताव पर दिया जिसमें कहा गया था कि कांग्रेस का उद्देश्य भारत को स्वतंत्र व सर्वोच्चसत्ता सम्पन्न प्रजातंत्र बनाना है और वह इसके लिए विधान-परिषद् में प्रयत्न करेगी।

पं० नेहरू ने कहा कि इतिहास में यह पहला मौका है जब-कि हम अपना ध्येय भारत जनतंत्र की स्थापना घोषित कर रहे हैं। इस प्रजातन्त्र का आधार सबकी समान उन्नति होगा।

पं० नेहरू ने कहा कि हाल ही में दर्जनों बार मेरे मन में स्तीफा देने का विचार उठा है। कलकत्ता और बिहार की घट-नाओं ने मेरा मन विक्षुब्ध कर दिया है। मैं तथा मेरे साथी आजादी लाने के लिए अन्तःकालीन सरकार में प्रविष्ट हुए थे। यद्यपि हमारा यह दावा नहीं कि हम पूर्णतः सफल हुए हैं पर हम बिल्कुल असफल भी नहीं हुए।

पं० नेहरू ने कहा कि मेरे बारे में कहा गया है कि बिहार पर बमवर्षा की धमकी दी थी किन्तु यह बिल्कुल गलत है।

विषय निर्वाचिनी समिति के समय मंच का दृश्य

नेतागण पंडाल के प्रवेश द्वार से आजाद हिन्द फौज के शाही बैंड के पीछे बड़ी शान और क्रम से आये। सबसे पहले राष्ट्रपति कृपलानी और मौलाना आजाद थे। फिर नेहरू जी और सरदार पटेल उनके पीछे बादशाह खान, पन्त और राजेन्द्र-प्रसाद, समाजवादी नेता जयप्रकाश नारायण और कमला चट्टो-पाध्याय एक साथ चल रहे थे। राजा जी, पट्टाभि और शंकरराव व उनके अनन्तर।

मंच पर लोक नायक अणे अपनी सुन्दर पगड़ी में आज विशेष रूप से दीप्यमान थे। कार्य समिति के सदस्यों के पीछे रक्षामंत्री सरदार बलदेवसिंह, वाणिज्य और व्यवसाय मंत्री श्री भाभा भी उपस्थित थे। सरदार पटेल राष्ट्रपति के साथ उनके तकिये की टेक लेते हुए सबसे आगे बैठे थे। उनकी बगल में मौलाना आजाद और बादशाह खान पीछे सरोजिनी नायडू, राजा जी, कमलादेवी चट्टोपाध्याय और नेहरू जी।

अधिवेशन की कार्यवाही लखनऊ के मौरिस कालेज आफ म्यूजिक के छात्रों द्वारा वन्देमातरम के गायन से प्रारम्भ हुई।

आज के अधिवेशन में एक बात विशेष रूप से उल्लेखनीय हुई, एक तो जितने भी भाषण हुए वे प्रायः सब हिन्दुस्तानी थे इंगलैंड, ब्रिटिश गायना आदि के संदेश वाहकों ने जब अपनी श्रद्धांजलियां अंग्रेजी में देनी प्रारम्भ की तो दर्शकों में से हिन्दी-हिन्दी की ध्वनि उठा और बाद में राष्ट्रपति के आदेशानुसार उनका उल्था विशुद्ध हिन्दी में सुनाया गया।

राष्ट्रपति पद पर आसीन होने पर उप-स्वागताध्यक्षा श्रीमती कमला देवी उन्हें बैज लगाकर हार पहिना रही हैं।
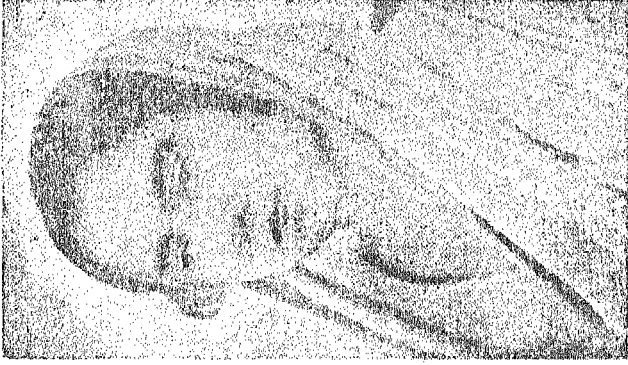
मंच का एक दूसरा दृश्य

अरुणा आसफ अली

कांग्रेस नगर की सफाई

और चहल पहल

भारतवर्ष में जहां बहुत छोटे छोटे मेलो मे गन्दगी और बुदबू के मारे खड़ा होजाना कठिन हाता है, उससे देखते हुये प्यारेलाल नगर की सफाई का प्रबन्ध बहुत उत्तम था, टट्टियां हालांकि बाजार के बिलकुल नजदीक बनी हुई थी पर वहां भी बदबू का नाम नही था। स्थान २ पर इश्तहार लगे हुये थे कि टट्टी जाने के बाद अपने हाथ से मिट्टी डालिये, तथा कांग्रेस मंच से भी सफाई के बारे में बार बार हिदायत मिलती थी उसी का परिणाम था कि बडे बडे कोट पैन्ट वाले बाबू साहब और थोड़ी बहुत रंग बिरंगी तितलियां जो वहां तमाशा देखने चली आई थीं नाक सिकोड़ कर अपने ही पाखाने पर मिट्टी डालती देखी गई थीं। वसे वहां खद्दर धारियों और गान्धी वादियों का साम्राज्य था जो यह कार्य करने मे गौरव समझते थे।

स्वयं सेविकाओं का अस्तित्व

गले में सुफेद खद्दर की पेटी डाले और नरमा के रंग की सलवार कुर्ता और टोपी लगाये, चोटी पीछे लटकाये धीर गम्भीर गति से इधर से उधर घूमती हुई स्वयं सेविकाओं ने कांग्रेस नगर की चहल पहल मे कोमलता फैला रक्खी थी, पर वह कोमलता दिल्ली की नुमायश और

और लाहौर की अनारकली से भिन्न प्रकार की थी, इनमें सजीवता के साथ साथ वह चपलता और अल्हड़पन नहीं था जो पुरुषों को बरबस अपनी ओर आकर्षित करता है बल्कि यहां था सेवा, प्रेम, और सच्चाई का वह गम्भीर तेज जो प्रत्येक दर्शक को एक विशेष कर्तव्य की याद दिलाता है।

नेताओं का दर्शन

आजाद हिन्द फौज के बैंड के साथ जब नेता लोग धीर गम्भीर गति से पड़ाल में पधारते थे तो जनता मन्त्र मुग्ध होकर उनके दर्शन करती थी, उस समय ऐसा मालूम होता था कि वास्तव में ही हमारे हृदयों के सच्चे राजा राजदरबार में पधार रहे हैं।

कांग्रेस नगर में वैसे भी इधर से उधर जाते हुए हर समय नेताओं के दर्शन जनता के मन को शान्ति देते थे, लोग आपस में जब एक दूसरे से उनमें से किसी किसी का परिचय पूछते थे तो नेताओं की मुसकराहट गजब कर देती थी।

बीच बीच में कृपलानी जी की दृढ़ और व्यंगपूर्ण आवाज जब माइक्रोफोन पर सुनाई देती थी तो दर्शकों में हंसी का फव्वारा छूट पड़ता था।

खाने पीने की सभी वस्तुयें कांग्रेस नगर में सुलभ मूल्य में अच्छी प्रकार प्राप्त हो रही थी, विशेषतया चाय के पेय पदार्थों का बड़ा जोर था। फल वाले कुछ लूट अवश्य कर रहे थे पर वह दूसरे मेलों की अपेक्षा कम थी। यातायात के लिये मोटर बसों का प्रबन्ध काफी अच्छा था और प्रायः हर समय बस शहर और स्टेशन के लिये मिल जाती थी।

सारा कांग्रेस नगर एक विहंगम दृष्टि से देखने पर एक फौजी छावनी जैसा मालूम देता था पर प्रवेश द्वारों की महरावें और गुम्बज किसी बौद्ध कालिक मठ या यज्ञशाला की याद दिलाते थे।

पं० प्यारेलाल शर्मा की मूर्त्ति अपनी विशेष छटा दिखाकर मानों कार्य कर्त्ताओं का कर्तव्य की और सेवा के पुरस्कार की याद दिला रही थी।

महात्मा गान्धी की कमी अधिवेशन में और मंचनर बराबर खटक रही थी और सब कुछ होते हुये भी वहां कुछ अभाव सा महसूस होता था। कुछ ग्रामीण दर्शक तो शंकरराव देव को ही महात्मा गान्धी समझ रहे थे और कुछ उनसे अधिक समझदार गान्धी जी के न आने का कारण पूछ रहे थे मानों वह सब वहां केवल अपने त्राता महात्मा गांधी के दर्शन के लिये ही आये थे। सच है महात्मा गांधी का नाम और काम आज प्रत्येक भारतीय आत्मा में इतना घुल मिल गया है कि उसकी बराबरी होना कठिन ही नहीं असम्भव है और इस देश की जनता जनार्दन सदा सर्वदा गांधी जी को अपने बीच में पाते रहने की जग नियन्ता से प्रार्थना करती रहती है।

स्वागत समिति के कुछ रत्न

आरम्भ—

पत्रों में यह चर्चा चली कि कांग्रेस हाईकमाण्ड अब कहीं न कहीं कांग्रेस का वार्षिक अधिवेशन करने की चिन्ता में है और तभी उन स्थानों का नाम भी पत्रों में आया, जिन्होंने अधिवेशन को निमन्त्रित किया था—उनमें मेरठ भी एक था। पाठकों के मन में स्वप्न था कि अधिवेशन बम्बई में होगा, क्योंकि भारत छोड़ो का नारा वहीं उठा था और इस प्रकार आरम्भ क्रांति की नींव वहीं रख दी गई थी, पर अचानक एक अनुमान प्रकाशित हुआ कि अधिवेशन मेरठ में होगा और शीघ्र ही एक प्रमाणित वक्तव्य के रूप में इस अनुमान की पुष्टि हो गई। मेरठ का राष्ट्रीय जीवन एक बार तो इस जिम्मेदारी से स्तब्ध हो गया, पर शीघ्र ही वह उत्साह की लहरों पर तैर चला। वर्कर सम्भल कर खड़े होगये। स्वागत समिति के सदस्य बनने लगे और स्वागताध्यक्ष के नाम की चर्चा सामने आगई। सब लोगों की हार्दिक इच्छा थी कि देवबंद दारुल उलूम के प्रिंसिपल और राष्ट्रीय मुसलमानों के सिपह सालार शेखुलहिन्द मौ० हुसैन अहमद साहब मदनी स्वागताध्यक्ष हों। उनके सामने आने की किसी को इच्छा न थी, पर मुल्क के इस खामोश खादिम ने यह पद लेने से इन्कार कर दिया और तब आपस की बातचीत के फलस्वरूप मेरठ के वयोवृद्ध कांग्रेसी श्री चौ० रघुवीर नारायण-सिंह जी स्वागताध्यक्ष चुने गये।

चौ० रघुवीर नारायणसिंह असौदा के प्रसिद्ध रईस और कांग्रेस के बहुत पुराने साथी हैं। कभी वे स्व० वाजिद अली-शाह की रंगीन पीढ़ी के रत्न थे, पर जब वे गांधी जी के झण्डे के तले आये, तो ईमानदारी के साथ उस झण्डे को वे थामे रहे और इस बुढ़ापे में भी वे उसी झण्डे के नीचे हैं। वे जोशीले आदमी रहे हैं और उनकी गर्जना से मेरठ जिले का गांव गांव गूंजा है। उनकी गूंज का जहां जनता ने मान किया, वहां सरकार ने भी कई बार उन्हें कृष्ण मन्दिर का अतिथि बनाकर मान किया। पिछले दस सालों के लम्बे अर्से में वे सेण्ट्रल असेम्बली के मेम्बर रहे हैं अब 'रिटायर्ड लाइफ' बिता रहे हैं। उन्हें स्वागताध्यक्ष चुनकर तरुणों ने अपनी शालीनता का परिचय दिया, इसमें सन्देह नहीं।

लाला सरयूप्रसाद जी

आपने कोई ऐसी झील देखी है, जो ऊपर से कम चौड़ी हो, पर जिसकी गहराई की थाह पाना कठिन है? यदि हो तो आप स्वागत समिति के प्रधान मन्त्री श्री सरयूप्रसाद के व्यक्तित्व को पहचान सकेंगे। भरा शरीर, साधारण लम्बा कद, पक्का रंग और चुस्त दुरुस्त कपड़े; यह उनका बाहरी हुलिया है। इस हुलिये में पक्का रंग सबसे महत्वपूर्ण है। उनका रंग उतना ही पक्का है, जितना सिद्धान्तों का विश्वास! उनका यह विश्वास आज के युग में आश्चर्य जनक रूप में व्यापक है। राजनीति में वे दूरतक देखते हैं, पर अध्यात्म में उनकी अखण्ड निष्ठा है और योगी अरविन्द की कृपा उन्हें प्राप्त है। अपने व्यक्तित्व की चुस्ती की तरह वे अपने कार्य में चुस्त हैं और अपने कार्यों की शृंखला चुन २ कर जोड़ते हैं। वे मेरठ जिले के परखे हुए

सिपाही हैं और स्वागत समिति ने उन्हें अपना प्रधानमंत्री चुन-कर सचमुच इस परख को प्रमाणित कर दिया है।

श्रीमती कमला चौधरी !

हिंदी की प्रसिद्ध कहानी लेखिका और आल इण्डिया रेडियो के आरहे डायरेक्टर जनरल श्री चौधरी की बहन श्रीमती कमला चौधरी अपने पद से स्वागत समिति की उपाध्यक्षा होकर भी अध्यक्षा ही थीं। पतली दुबली आकृति और उंगलियों में चीनी कला सी कमनीय और किसी ऊंचे फिलासफर-सी अपने में ही डूबी-डूबी सी, निरंतर कार्यमग्न एक नारी; आप मेरठ अधिवेशन में कहीं भी उन्हें पहचान सकते थे और कांस्टीटयु-एण्ट असेम्बली में कहीं भी उन्हें पहचान सकेंगे। कांग्रेस की पुरानी कार्यकर्त्री, जेल और बाहर सदा कर्मठ, शक्तियों का केन्द्र और आकांक्षाओं का भण्डार; यह महिमामयी श्री कमला चौधरी !

श्री रामस्वरूप शर्मा

यदि सारे प्रान्त के राष्ट्रीय जीवन को मथकर १० श्रेष्ठ-तम कार्यकर्ता चुने जायें तो श्री रामस्वरूप शर्मा किसी भी दृष्टि से उनमें एक होंगे। हम जरा सा भी कार्य करते हैं, तो जैसे साथ २ आइने में अपना मुंह भी देखते जाते हैं, पर रामस्वरूप शर्मा, अपने प्रति सदा निस्पृह अपने को सदा भूले, मुस्कराहट में मणियां बखेरते, वाणी में शिवालिका मधु का भण्डार उण्डे लेले, जब झपटते झपटते किसी ओर को चलते, तो सारा वातावरण सजीव हो उनके साथ चल उठता। स्वागत समिति के पंडाल इंचार्ज, सारे निर्माण के अधिनायक, पर वही राम-

स्वरूप शर्मा—साथियों के साथी और किसी भी अपरिचित यात्री के मित्र।

श्री जैन बहादुर

मेरठ कांग्रेस के इंजीनियर श्री जैन बहादुर जैन। प्रतिभा के भंडार और कर्म के अनथक। जब पुराने इंजीनियरों ने इतने कम समय में कांग्रेस नगर के निर्माण को असम्भव बता दिया, तब धीरे से उन्होंने कहा—"नहीं यह बात तो नहीं है" और सारी जिम्मेदारी उनके कन्धों पर रख दी गई। उसे उन्हों-ने किस सुन्दरता से निभाया, मेरठ कांग्रेस उसी की एक तस्वीर थी। भाई जैन बहादुर का व्यक्तित्व बाहर से जितना सरल है, भीतर की सफलता उससे कहीं अधिक है। लगभग १५ वर्ष वे सरकारी ऊंचे पद पर रहे, पर गरीब विधवा मां के पुत्र होकर भी उन्होंने रिश्वत का बोरियों रुपया ठुकरा दिया और चरित्र के बल पर अपने अफसरों को भी दबाकर वे चले। फिर भी नौकरी से वे ऊब गये और उसे छोड़ आये। जिस काम के लिये वे नौकरी छोड़ आये, मेरठ कांग्रेस ने, जैसे उसके लिये राह बनादी है। स्वागत समिति को जो सफलता मिली, उस-की कुंजी उन्हें जाये, तो उचित ही है।

श्री रामकृपालसिंह

स्वागत समिति के अर्थ मन्त्री श्री रामकृपालसिंह का काम शानदार रहा। काम जिम्मेदारियों और झमटों से भरा, पर उनकी सूझ और श्रम ने उसे सरल कर दिया।

श्री रघुकुल तिलक

यू० पी० सरकार के पालियामेण्टरी सेक्रेटरी श्री रघुकुल तिलक एम० ए० का स्वागत समिति में वही स्थान था, जो

मशीन में श्रीस का। अपने ऊँचे सुलझे हुए, सरल और सबल व्यक्तित्व से वे बिखरी कड़ियों को मिलाये रहे और उनसे काम लेते रहे। तिलक जी हमारे प्रान्तकी उन विभूतियों में हैं, जिन्हें मान भी दिया जा सकता है। 'कोलाहल और प्रदर्शन से दूर निर्माण यह उनकी जीवन दिशा का 'कुतुबनुमा' है और आज कल प्रान्त की शिक्षा को जो दिशा देने में वे लगे हैं, यह प्रान्त के इतिहास की एक महत्वपूर्ण कड़ी है।

एक दृष्टि में—

इसके अतिरिक्त एक दृष्टि में जो साथी आते हैं, उनमें सर्व श्री कृष्णचन्द्र शर्मा एम० एल० ए० कैलाशप्रकाश डिप्टी जो० ओ० सी०, हिन्दी के पुरोहित श्री विश्वम्भर सहाय 'प्रमी' और खादी के वशिष्ठ विचित्र नारायण शर्मा! मूकभाव से जिन साथियों ने रात दिन काम किया, सारी सफलता की आत्मा तो वास्तव में वे ही हैं।

झण्डाभिवादन समारोह

प्यारेलाल नगर (मेरठ) २३ नवम्बर—

राष्ट्रपति आचार्य कृपलानी ने आज प्रातः कांग्रेस नगर के मध्य में, जहां कांग्रेस कार्य समिति के सदस्यों तथा प्रान्तीय प्रधान मंत्रियों व मन्त्रियों के अतिरिक्त हजारों व्यक्ति उपस्थित थे, झण्डाभिवादन की रस्म अदा की। इस समारोह के अवसर पर आजाद हिन्द फौज के सैनिकों, देश सेविकाओं, कांग्रेसी स्वयं सेवकों और सीमा प्रान्त के लाल कुर्ती दल वालों ने एक शानदार परेड की। परेड के समय आजाद हिन्द फौज का बैण्ड बाजा बज रहा था।

कांग्रेसी नेता पं० जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में ठीक ६ बजे पधारे और एक १२ फुट ऊंचे मंच पर खड़े हो गये जहां एक ऊंचे पोल पर तिरंगा झण्डा लगा हुआ था। आचार्य कृपलानी चबूतरे की सबसे ऊंची सीढ़ी पर खड़े

हुये थे। उनके दांयी बाईं ओर आजाद हिन्द फौज के कप्तान शाहनवाज़ व श्री नागर खड़े हुये।

नीचे की सीढी पर खान अब्दुल गफ्फार खां, बा० राजेन्द्र प्रसाद, श्रीमती सरोजनी नायडू, सरदार वल्लभ भाई पटेल व पंडित जवाहरलाल नेहरू खड़े थे।

तीसरी सीढी पर श्री जयप्रकाश नारायण, श्री रफी अहमद किदवई, पं० गोविन्द वल्लभ पन्त, श्री बी० जी० खेर और पट्टाभि सीता रमैय्या थे।

आजाद हिन्द फौज के आदमी व अन्य स्वयं सेवक मंच की ओर मुंह किये हुये खड़े थे। आरम्भ में राष्ट्रपति जी की धर्म पत्नी श्रीमती सुचेता कृपलानी और कवीन्द्र रवीन्द्रनाथ टैगोर की पौत्री श्रीमती नन्दिता ने "वन्देमातरम्" गान किया पश्चात झण्डा फहराते हुये आचार्य कृपलानी ने तिरंगे झण्डे के महत्व पर भाषण दिया।

खुला अधिवेशन आरम्भ

प्यारेलाल नगर (मेरठ), २३ नवम्बर भारतीय राष्ट्रीय महासभा का ५४ वां महाधिवेशन आज यहां तीसरे पहर राष्ट्रपति आचार्य कृपलानी की अध्यक्षता में आरम्भ हो गया।

राष्ट्रपति आचार्य कृपलानी आजाद हिन्द फौज के एक बैंड के साथ जुलूस के रूप में पंडाल में पहुंचे।

इससे पूर्व प्रातःकाल आचार्य कृपलानी ने राष्ट्रीय ध्वजा फहराई। ध्वजारोहण के अवसर पर आज़ाद हिन्द फौज के सैनिकों, देश सेविकाओं, कांग्रेस स्वयंसेवकों व लालकुर्ती दल वालों की परेड हुई।

पण्डाल के भीतर दस हजारके लगभग डेलीगेट तथा दर्शक उपस्थित थे और पण्डाल के बाहर भी अपने नेताओं के दर्शन, स्वागत और उनके भाषण सुनने के लिए एक विशाल जन-समूह उमड़ा पड़ता था। बाहर खड़ी हुई जनता ध्वनिविस्तारक यन्त्रों से पण्डाल के भीतर होने वाले भाषणों को सुन रही थी।

पण्डाल के भीतर सभामंच पर कांग्रेस कार्य समिति के सदस्य, अन्तःकालीन सरकारके मंत्री सर्व श्री भाभा व सरदार बलदेवसिंह, श्री टी०प्रकाशम, श्रीअणे, श्रीमती सरोजिनी नायडू और डा० पट्टाभि सीतारमैय्या विराजमान थे। पंडाल अत्यन्त सुन्दर किन्तु सादा बनाया गया था। पिछली परम्पराओं की तरह इस बार पंडाल चित्रों आदि से अलंकृत नहीं किया गया था, केवल कहीं-कहीं खम्भों तथा द्वारों पर राष्ट्रीय झंडे अभि-मान से लहरा रहे थे। मंच की सीढ़ियों पर आम के पौधों से सुसज्जित गमले रखे हुए थे।

स्वागताध्यक्ष चौधरी रघुवीर नारायणसिंह के द्वारा राष्ट्रपति डेलीगेटों तथा अन्यान्य अभ्यागत महानुभावों का स्वागत किये जाने के बाद लन्दनकी इन्डियालीग, फिजी के प्रवासी भारतीय,

मलाया भारतीय कांग्रेस, पूर्वी अफ्रीका भारतीय कांग्रेस तथा अन्य अनेक देश-देशांतर व द्वीप-द्वीपांतर से आये भारतीय प्रतिनिधियों ने राष्ट्रीय महासभा के प्रति अपनी बन्धुत्वपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की।

इसके उपरांत गत ६॥ वर्षों में स्वर्गवासी हुए नेताओं के प्रति शोक का प्रस्ताव पास किया गया।

इसके बाद नेहरू जी ने 'अतीत पर एक दृष्टि' सम्बन्धी प्रस्ताव पेश किया जो परसों विषय निर्वाचन समिति में स्वीकृत हुआ था।

प्रस्ताव पेश करते हुए नेहरूजी ने रामगढ़ कांग्रेस से लेकर अब तक की घटनाओं की चर्चा की और कहा कि आज हम में से बड़े-बड़े लोग हुकूमतकी ऊंची-ऊंची कुरसियों पर बैठे हैं। हमारे पहले इस कुर्सी पर अंग्रेज और हिन्दुस्तानी भी बैठे थे। अब हमारे जाने से बड़ा फर्क हुआ है, लेकिन अंग्रेजी हुकूमत की जड़ नहीं कटी है, काफी ढीली अवश्य पड़ गई है। हमारी आजादी के रास्ते में बाहर और भीतर से भी रुकावटें आ रही हैं। लीग और ब्रिटिश हुकूमत की समान ख्वाइशें होने के कारण दोनों मिल जाती हैं सन १९४२ में एक बड़ा तूफान उठा– वह समय का तकाज़ा था—बिना बागडोर के लोग उठ खड़े हुये। आजादी का जजबा दबाया जा रहा था, लेकिन जनता इसे सहन नहीं कर सकती थी। ऐसा कर जनता ने

अच्छा किया, न होता तो नागवार लगता। कौम की ऐसे ही परीक्षा होती है। कांग्रेस को बड़ी कुर्बानी करनी पड़ी। बाकी लोगों ने भी सहायता दी। बाज दल उसमें शामिल नहीं हुआ। बाज दल जोर-जोरसे हमारे विरोध में आवाज उठाते थे।

उस समय के हिन्दुस्तानी अफसरों के रवैये को हम भूल नहीं सकते (करतल ध्वनि)। मैं यहां उपस्थित हमारे प्रांतीय प्रधान-मंत्रियों और वाइसराय को अच्छा तरह यह सुना देना चाहता हूँ कि जहां-जहां खास वाकिये हुये वहां के अफसरों को खास सजा दी जानी चाहिये।

वाइसराय ने मुझे कई बार कहा है कि ऐसे अफसरों (सर्विस) को नहीं दबाना चाहिये। मैं कह देना चाहता हूँ कि मैं दबाना तो नहीं चाहता; जिन्होंने बेवकूफी की है उनसे कोई ढिलाई नहीं की जा सकती।

उन्होंने यह भी कहा कि यदि ऐसे अफसर सरकार और जनता से सहयोग न करें तो किसी मुल्क में काम करना भी मुश्किल हो जाता है। लेकिन यदि वह गलती करे तो उसे सजा देनी चाहिए, नहीं तो खराबियां आ जाती हैं। जहां सख्त गलती हो उसे छिपानी नहीं चाहिए। मैंने उनमें काफी काबिल और मेहनती आदमी भी पाये लेकिन उनके साथ मैंने पुराना दिमाग पाया। वे पुरानी तरफ देखते हैं—घबराते हैं। यह फिरका नए ढंग से पला है और एकाएक आगे नहीं बढ़ सकता। सरहद

में भी मैंने अजीबोगरीब तमाशे देखे। इसके पीछे क्या था? बुनियादी गलती थी। सब से ज्यादा यह गलती सरहद में पायी गयी। अफसर पुराने दिमाग के हैं, कांग्रेस एक इन्कलाबी जमात है।

ब्रिटिश हकूमत और लीग का गठबन्धन

अँग्रेजी हुकूमत बड़ी-बड़ी बात करती है लेकिन उसका दिमाग पुराने ढंग का है। वह मुस्लिम लीग से हमदर्दी रखती है। इसके मायने यह नहीं कि वह वास्तव में उसमें हमदर्दी रखती है। चूंकि मुस्लिम लीगका भी दिमाग पुराना है इसलिए वे मिल जाते हैं। वे नहीं बदलते, हम बदलते हैं। अँग्रेजी हुकूमत से मेरा खास मतलब यहां के अँग्रेज अफसर और गवर्नरों से है। मुझे शक है कि वह पुराना दिमाग हमारे साथ चलेगा। जनता आगे बढना चाहती है। यदि पुराने दिमाग वाले विलायत न गये तो कशमकश होगी। ब्रिटिश सरकार आगे बढती है लेकिन फिर उन ताकतों को बढा देती है जो प्रगतिशील ताकतों को रोकती हैं। इससे होता यह है कि बढती हुई ताकत के सामने बाधाएं आती हैं। यदि ब्रिटेन की मजदूर सरकार आगे भी बढना चाहे तो पुराने अफसर अड़ंगा लगाते हैं इसलिये दिक्कतें आतीं हैं। उनसे हमारी हमदर्दी है, लेकिन हमें काम करना है इसलिए रुकावटें हटानी पड़ेंगी।

मैं दिल्ली के सेक्रेटेरियट में कुछ काम करने गया हूँ और कर रहा हूं। मुझे दुःख है कि जिन लोगों ने नक्शा बनाया है वे ही आगे नहीं बढने देना चाहते।

हम कांग्रेस के अन्दर एक अजीब पेंच में पड़ गये हैं। कशमकश एक जिन्दगी की निशानी भी होती है, लेकिन आजकलकी कशमकश नुक्सानदेह है। मैं नहीं चाहता कि हम पुराना साहस छोड़ दें। दुश्मन सामने है उनका सामना करना है अतः इन बुराइयों को दूर करें। छोटे-छोटे झगड़ों में न पड़ें।

पन्तजी द्वारा समर्थन

पं० गोविन्द बल्लभ पन्त ने प्रस्ताव का समर्थन करते हुए कहा कि यह जनता की कुर्बानी का असर है कि हम आजादी के निकट पहुंचे हैं। कितने ही ऐसे लोगों ने कुर्बानी की है जिनका हम नाम तक नहीं जानते। हमारे देश में स्वतन्त्रता की लड़ाई जिस ढंग से लड़ी जा रही है वैसी कहीं नहीं लड़ी गई। यह गांधी जी की देन है। उनका अहिंसा बहुत बड़ा अस्त्र है।

१६४२ का आंदोलन

हमारी ताकत सन् १६४२ के कार्यक्रम से बहुत बढी। उससे मुल्क ने एक नयी ताकत हासिल करली। यदि हम अपने रास्ते पर डटे रहें तो हम इस संसार को आगे बढा सकते हैं। हम चाहें, विधान परिषद् में हों या नहीं, मन्त्रि मण्डलों में हों या न हों, हमारा मकसद पूर्ण स्वतन्त्रता प्राप्त करना है। मुल्क की

ताकत को बढ़ाना अत्यावश्यक है फिरकेबाजी बन्द कर देनी चाहिये। जब तक आजादी हासिल न होगी तबतक यदि इधर-उधर भटकेंगे तो आजादी के पास जाकर भी फिसल सकते हैं।

इस प्रस्ताव के सम्बन्ध में दो अजीब संशोधन आये जिनमें से एक को अध्यक्ष ने रद्द कर दिया और दूसरे के पक्ष में एक भी मत नहीं आया। इस तरह प्रस्ताव सर्वसम्मति से स्वीकार कर लिया गया।

सरदार पटेल का भाषण

पुष्टिकरण सम्बन्धी प्रस्तावको, जिसे विषय निर्वाचन समिति ने कल स्वीकार कर लिया था पेश करते हुए सरदार पटेल ने कहा कि ब्रिटेन में मजदूर दली सरकार बनी हुई है। उसने भारत को आजादी देने का ऐलान किया इसलिए हमें उस पर विश्वास करना पड़ा।

आपने भारत में हुई गत ६ मास की राजनीतिक वार्ताओं की विस्तृत चर्चा की और पत्र-व्यवहार को पढ़ कर बताया कि श्री जिन्ना ने वाइसराय को यह लिखित आश्वासन दे दिया था कि लीग अन्तःकालीन और दीर्घकालीन योजनाओं को स्वीकार करती है। जिन्ना ने अन्तःकालीन सरकार में सहयोग देने का भी वचन दिया था।

सरदार पटेल ने आगे कहा, "हम अन्तःकालीन सरकार में अलग होने के लिए नहीं आये हैं और यदि हटेंगे भी तो ऐसे-वैसे नहीं हटेंगे (करतल ध्वनि)। सरकार को हमें बर्खास्त करके हटाना पड़ेगा। अभी जो चाल चली जा रही है, वह कांग्रेसको अन्तःकालीन सरकारसे हटाने की है। यदि हम स्वयं हट जायेंगे तो हम उनके फंदे में पड़ जायेंगे। लीग नेहरू सरकारको वाइस-राय की शासन-परिषद कहती है। यदि लीग स्वराज्य नहीं चाहती, वह न चाहे।

लोग कहते हैं कि कलकत्ता, नोआखाली और बिहार में जो हुआ उसके बारे में केन्द्रीय सरकार क्यों नहीं कुछ करती। मैं सब बातें तो बता नहीं सकता लेकिन इतना कह देता हूं कि सन १९४६ की स्थिति सन् ४२ की स्थितिसे भिन्न है। लोग कहते हैं कि जिस तरह सन् १९४२ में केन्द्रीय सरकार की आज्ञा पर राष्ट्रवादियों को जेल में डाल दिया गया उसी तरह प्रतिक्रिया-वादियों को गिरफ्तार कर सरकार उन्हें जेलमें क्यों नहीं डाल देती। सन् १९४२में हम अंग्रेजों के साथ पूरी ताकत से लड़ रहे थे। उन दिनों सरकार ने लड़ाई की आड़ में कई आर्डिनेन्स जारी कर रखे थे, वे आज नहीं हैं। हमें आपस में मरने-कटने का अधिकार दिया गया है। बंगाल के गवर्नर ने बंगाल की घटनाओं को नहीं रोका जिसका परिणाम यह हुआ कि लोगों ने रक्षा की बागडोर अपने हाथ में ले ली। यदि आजादी चाहिए तो सरकार से रक्षाके लिए बार-बार सहायता प्राप्त करने की आशा न करो। आत्म-रक्षा करना सीखो। जब मुझसे पूछा

गया कि केन्द्रीय सरकार क्या करेगी, तो मैंने कहा कुछ नहीं करेगी। तुम अपने बचाव की तैयारी करो। तो फिर यह पूछा जा सकता है कि हम केन्द्र से क्यों नहीं हट जाते, परन्तु वास्तविक में कोई हिन्दुस्तानी ऐसा नहीं चाहता। अंग्रेजों से लड़नेके लिए बुद्धिमानी और ताकत की जरूरत है।

यदि हमें केन्द्रीय सरकार से हटना ही पड़ा तो हम अंग्रेज का मुंह काला करके ही हटेंगे। हम उनका मुंह इस तरह काला करेंगे कि वह दूसरे के सामने मुंह दिखाने लायक न रह जाय।

आजकल जो दुर्घटनाएं हो रही हैं, वह गुण्डों का काम नहीं इसमें धार्मिक मकसद भी नहीं है, यह केवल राजनीतिक चाल है। बंगाल में चाहे २०० या ३०० ही मरे हों, किन्तु इससे जितनी चोट लगी है उतनी चोट ४३ के दुर्भिक्ष से नहीं लगी। जब बंगाल में जबरदस्ती धर्म-परिवर्तन किया जा रहा था तब बहुत दिनों तक कोई लीगी मुसलमान नहीं बोला। उसी का नतीजा बिहार में हुआ।

बंगाल में अब गांधी जी क्या कर रहे हैं, वे अपनी खुराक काट कर शरीर गला रहे हैं। गांधी जी सुलह के लिए छोटी-छोटी लड़कियों को गांवों में भेजते हैं। मैं कहता हूं कि बंगाल में तब तक सुलह नहीं होगी जब तक लीगी यह न जान जायें कि उसका बदला लिया जा सकता है। बिहार के मुसलमानों को बंगाल में ले जाकर बसाने की चेष्टा हिटलर की चेष्टा की तरह बेकार होगी।

लीग को हटना पड़ेगा

यदि पाकिस्तान लेना है तो हिन्दुस्तान में कभी शान्ति नहीं हो सकती। मैं लीग से कहता हूं कि यदि वह विधान परिषद् में नहीं आई तो केन्द्रीय सरकार से निकलना होगा। (करतल ध्वनि), क्यों कि उसने लिखित वायदा किया है। जब तक लीग जहर उगलना बन्द न करेगी तब तक शान्ति नहीं हो सकती।

सरकारी अफसरों को चेतावनी देते हुए आपने कहा कि यदि वे सफाई से काम करना चाहते हैं तो ठीक है, नहीं तो इसका परिणाम बुरा होगा।

तलवार का जवाब तलवार से

"मैं आपसे अपील करता हूँ कि धोखे से पाकिस्तान लेनेकी बात न करो। हां, यदि तलवार से लेना है तो उसका मुकाबला तलवार से ही किया जा सकता है। आजकल पीछे से छुरा-भोंकना शुरू हो गया है। मैं आज सबसे कहता हूँ कि रक्षा करना सीखो, नहीं तो मर जाओगे।

मैं आशा करता हूँ कि जो गृह-युद्ध करना चाहते थे अब उनका पेट भर गया होगा। ब्रिटिश हुकूमत हर हालत में जाने वाली है। वह जाते-जाते आखिरी चिंगारी छोड़ जाना चाहती है।

आप ताकत का इस्तेमाल मारने के लिए नहीं, किन्तु आत्म रक्षा के लिए जरूर करें। यदि ऐसा न करोगे तो कुछ नहीं होगा।

डाक्टर बालकृष्ण केसकर ने दो वाक्यों में ही इस प्रस्ताव का समर्थन किया।

अरुणा आसफअली का विरोध

श्रीमती अरुणा आसफअली ने इस प्रस्ताव का जोरदार विरोध किया। उन्होंने कहा कि मेरी मुखालिफत इस बात की है कि सन् १९४२ के बाद भी कांग्रेस को दुश्मन से सहयोग नहीं करना चाहिए था। यह क्रान्तिकारी दल की राय है न कि मूर्खों के दल की। आप खुद कहते हैं, कि आज नहीं तो कल अन्तःकालीन सरकार से निकलना पड़ सकता है। तो फिर कांग्रेस से इतना बड़ा अधिकार क्यों मांगते हैं।

यदि आप ऐसा करते हैं तो आप खुद ज्यादती करते हैं। आप देखिये कि इस काम में अँग्रेज किस तरह की चाल चल रहा है। जिन्ना का बोलबाला ब्रिटिश सरकार की इस तजवीज से ही है। सन् १९४२ में उसकी कहीं कोई नहीं सुनता था। हमें तलवार की धार अँग्रेज पर डालनी है न कि किसी भारतीय पर।

क्रांतिकारी नीति

हमारा और आपका, दोनों का उद्देश्य एक है लेकिन नीति में फर्क है। हम क्रांतिकारी नीति जारी रखना चाहते हैं और आप सहयोग की नीति चाहते हैं। इसलिये आप कांग्रेस को छोड़ कर अलग दल बनायें।

अब्दुल जलील ने कहा सरदार पटेल की तकरीर के बाद मैं इस प्रस्ताव की मुखालफत करता हूं, क्योंकि तलवार का बदला तलवार से लेने का अर्थ गृह-युद्ध का आमन्त्रण करना है।

श्रीमती रामदुलारी सिन्हा ने भी प्रस्ताव का विरोध किया।

प्रस्ताव का समर्थन करते हुए श्री जगतनारायण लाल ने कहा कि क्रांति के परखनेवाले आज नोआखाली में अपने शरीर को गला रहे हैं। सरदार पटेल और नेहरू जी अच्छी तरह जानते हैं कि कब क्रांति करनी चाहिए और कब नहीं। उन्होंने जब यह कह दिया है कि कांग्रेस यदि अन्तःकालीन सरकार से हटेगी तो ब्रिटिश सरकार का मुंह काला करके हटेगी, इससे अधिक आश्वासन की आवश्यकता नहीं है।

बहस का जवाब देते हुए सरदार पटेल ने कहा कि यह ठीक है कि लोग कहते हैं कि अहिंसा के सिद्धांत को छोड़ देना कांग्रेस सिद्धांत के खिलाफ है। मैंने आपको कई बार कहा है कि सरकार तो है ही नहीं। असली सरकार बनाने के लिये तो विधान परिषद बैठ रही है।

इतनी पुलिस और सेना सबको सहायता पहुंचाने में असमर्थ है। इतनी पुलिस और सेना नहीं है कि वह सबकी रक्षा कर सके। मैं अब भी कहता हूं कि सब अपनी रक्षा के लिये तैयार रहें।

क्रांति की जो बात कही जाती है कि उससे काम नहीं हो सकता। बिना मौके के क्रांति नहीं हो सकती। यदि हमें ब्रिटिश

हुकूमत को हटाना है तो उसे यहाँ से हटने में मदद देना कोई गलती नहीं है। आज दूसरे प्रकार की क्रांति करने की आवश्यकता है। हम तो कहते हैं कि यहां से सेना हटालो।

ब्रिटिश सरकार ने संयुक्त भारत का सिद्धांत मान लिया है। उसके बाद भी यदि लीग पाकिस्तान की मांग करती है तो उसके लिए सरकार में कोई स्थान नहीं।

मैं बंगालियों से अपील करता हूं कि आप अपना फर्ज अदा करें, सारा हिन्दुस्तान आपके साथ होगा।

प्रस्ताव भारी बहुमत से स्वीकृत हुआ।

विधान परिषद्

विधान परिषद सम्बन्धी प्रस्ताव पेश करते हुए आचार्य आचार्य नरेन्द्रदेव ने कहा कि ब्रिटिश सरकार, विधान परिषद द्वारा विधान बनवाना चाहती है और सुलह करना चाहती है। वह एक तरफ स्वराज्य देना चाहती है और दूसरी ओर उसे छीन लेना चाहती है। मिस्र में हुई संधि को देख लीजिये। यदि वह मिस्र को स्वतन्त्र कर देगी तो वह फिलस्तीन या सूडान को अपने कब्जे में रखेगी। ब्रिटेन हमसे कई तरह की बातें करना चाहेगा। हम ऐसी बात नहीं चाहते। इसलिये इस प्रस्ताव में ऐलान कर दिया जाता है कि हम पूरी आजादी चाहते हैं।

आज हमें गरीबी, सामन्तशाही और साम्राज्यशाही से लड़ना है। भारत के भावी नक्शे में क्या तजबीज होगी। इसी ओर इस प्रस्ताव में इशारा किया गया है।

पटवर्द्धन द्वारा समर्थन

प्रस्ताव का समर्थन करते हुए राव साहब पटवर्द्धन ने कहा कि आजादी की रोशनी गरीब किसान के घर में दीखनी चाहिए। गत २५ वर्षों की कांग्रेस की कार्रवाही की विस्तृत चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि हमारे सामने वह तजबीज सामने है जिसमें पूंजीपतियों का राज नहीं होगा। आज का प्रस्ताव आम हिन्दुस्तानियों के लिए इस बात का ऐलान करता है कि स्वराज्य आम लोगों के लिये होने वाला है। कांग्रेस ऐसा राज्य चाहती है जिसका शासन किसानों के द्वारा होगा।

कुछ अन्य वक्ताओं के बाद यह प्रस्ताव भी भारी बहुमत से पास हो गया।

इस प्रकार आज का अधिवेशन राष्ट्रीय नारों के बीच समाप्त हुआ।

स्वागताध्यक्ष का भाषण

स्वागताध्यक्ष चौधरी रघुवीर नारायणसिंह ने अपने भाषण में ६० प्रतिशत अरबी और ईरानी शब्दों का प्रयोग करते हुए जो कुछ उसका अर्थ अधिकांश जनता न समझ सकी। उन्होंने कहा जिस मेरठ ने महाभारत का युद्ध देखा है, जहाँ सन् १८५७ में पहली गोली चली उसी शहर में आज खुशनसीब कहूँ या बदनसीब, भारत की सबसे बड़ी राष्ट्रीय संस्था का इजलास हो रहा है। यह खुशनसीबी ही है।

अन्त:कालीन सरकार की स्थापना का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि—इससे देश भर में नई लहर फैल गई है। हमें गुलामी की जंजीरों में जकड़ने वाली हुकूमत दिन-बदिन कमजोर हो रही है। अंग्रेजों की "फूट डालो और हुकूमत करो" की नीति कायम है, और रहेगी, तो भी हम आगे ही बढ़ते जाएंगे।

हाल के हुए साम्प्रदायिक दंगों ने मेरठ की आशा पर पानी फेर दिया। मेरठ के निकट के स्थानों में जो दर्दनाक घटनाएं हुई हैं, उससे सबको शर्म आती है।

देश विदेश के पत्र प्रतिनिधि

श्री बा० जयप्रकाश नारायण

डा० राम मनोहर लोहिया
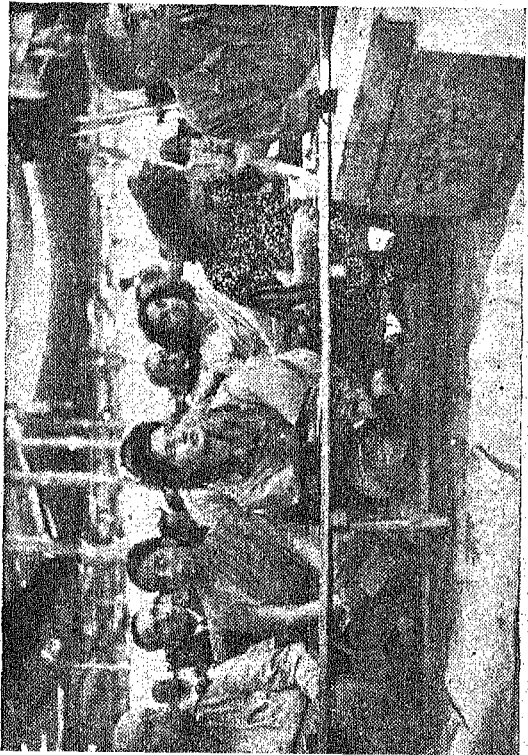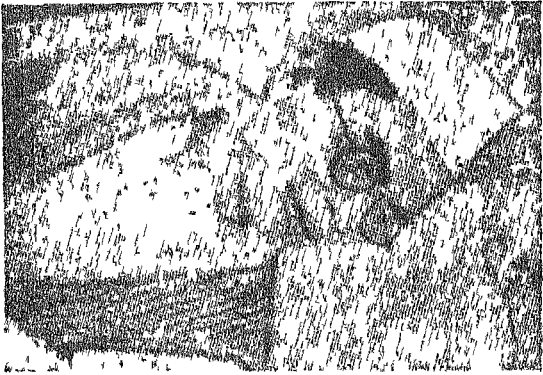
मूर्ति का उद्घाटन करते हुए नेहरू जी

राष्ट्रपति कृपलानी जी का

भाषण

आज हम ६ वर्ष के बाद आपस में मिल रहे हैं। इस बीच में हमें ब्रिटिश सरकार के साथ दो बार मोर्चा लेना पड़ा है। सन् १९४१ में हमने व्यक्तिगत सत्याग्रह किया था। इसका उद्देश्य युद्ध के सम्बन्ध में अपनी राय जाहिर करने की स्वतंत्रता प्राप्त करना था। हमारा यह आन्दोलन अपनी उद्देश्य पूर्ति में काफी सफल रहा।

दूसरा आन्दोलन हमने अगस्त १९४२ में प्रारम्भ किया था। १९३० में पूर्ण स्वाधीनता का प्रस्ताव पास करके हमने अंग्रेजों को आगाह कर दिया था कि वे हिन्दुस्तान छोड़कर चले जाय। किन्तु उन दिनों ब्रिटेन अपने साम्राज्यवादी जाल में फसकर एक युद्ध में जूझ रहा था। उसे भय था कि कहीं जापान हिन्दुस्तान पर धावा न बोल दे। इसलिए उसने भारतीयों को अपने घरों व खेतों से बाहर कर दिया, उनकी फसलों को चौपट कर दिया। लोग परेशान थे, अखबारों के मुंह बन्द कर दिये गये थे। किंतु कांग्रेस इस चुनौती की उपेक्षा नहीं कर सकती थी। गांधी जी ने इस चुनौती को स्वीकार किया, उन्होंने आह्वान किया कि कांग्रेस को लड़ते-लड़ते मर जाना चाहिए। कांग्रेस और देश ने उनका अनुसरण कर अक्लमन्दी का परिचय दिया।

अनेक समझदार राजनीतिज्ञों ने इस आन्दोलन की सफलता पर सन्देह प्रकट किया। लेकिन ऐसे लोग भूल जाते हैं

कि जब गांधी जी के नेतृत्व में कांग्रेस ने खिलाफत का आन्दोलन शुरू किया था, तो क्या उसमें कोई अक्लमन्दी थी ? फिर स्वाधीनता प्राप्ति के लिए नमक सत्याग्रह छेड़ना क्या अक्लमंदी थी ? गांधी जी का कुछ चुने हुए लोगों के साथ डांडी प्रयाण करना क्या अक्लमंदी थी ? पं० मोतीलाल नेहरू द्वारा अपनी अध्ययनशाला में एक स्प्रिट लप पर एक परीक्षण नली में मिट्टी से नमक तैयार करने में क्या कोई अक्लमंदी थी ? फिर कुछ सत्याग्रहियों को तब तक युद्ध विरोधी नारे लगाते रहने का जब तक कि उन्हें गिरफ्तार नहीं कर लिया जाता, हुक्म देना कोई अक्लमंदी थी ? इसका अभिप्राय यह है कि गांधी जी के नेतृत्व में क्रान्ति के पथ पर अग्रसर होते समय कांग्रेस परम्परागत राजनैतिक अक्लमंदी का परित्याग कर दिया करती है।

अगस्त आंदोलन समाप्त हुआ। अंग्रेज फिर भी भारत में बने रहे। हमें ताने मिलने लगे—"देखा हमने भी तो यही कहा था।" लेकिन गांधी जी और कार्यसमिति के सदस्यों के रिहा होते ही तमाम निराशा काफूर होगई। राष्ट्र में एक नया जीवन पैदा हो गया। नेताओं का शिमला जाना एक तरह कांग्रेस का विजय-प्रमाण था। केन्द्रीय व प्रान्तीय चुनाव हुए। जिन लोगों को कांग्रेस की राजनीति में अक्लमंदी नहीं दीखती थी, वे फिर कांग्रेस में आने लगे। उनका स्वागत हुआ। चुनाव-परिणाम से साबित होगया कि देश को कांग्रेस पर विश्वास है।

जो लोग देश की आजादी के लिए लड़ते-लड़ते बच गए, उन्हें इनाम मिल गया। लेकिन जिन्होंने सबसे अधिक तकलीफ पाई, वे भाई आज हमारे बीच नहीं हैं। आज हम

सब अपने समस्त शहीदों के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

कांग्रेस कार्यसमिति के सदस्य जून १९४५ में रिहा किए गए। वायसराय ने केन्द्र में राष्ट्रीय सरकार स्थापित करने को शिमला-सम्मेलन बुलाया। किन्तु लीग नेता ने यह कह दिया कि मंत्रिमंडल में एक भी गैर लीगी मुसलमान को न लिया जाय। यही कारण था शिमला-सम्मेलन विफल हो गया।

उधर ब्रिटेन में पार्लियामेण्ट के आम चुनाव में टोरियों की हार हुई। मजदूर दल ने सरकार बनाई। अन्तराष्ट्रीय स्थिति बदल गई। भारत ब्रिटिश साम्राज्य का सबसे अधिक कमजोर पहलू प्रतीत होने लगा। एक पार्लियामेण्टरी शिष्टमंडल भारत आया उसके बाद ब्रिटिश अमात्यमंडल भारत आया। इस मिशन ने १६ मई को घोषित किया कि भारत का विधान बनाने को शीघ्र ही विधान परिषद् बुलाई जायगी और केन्द्र में अन्तःकालीन सरकार कायम होगी।

६० दिन तक शिमला व दिल्ली में बातचीत होती रही। फलस्वरूप कांग्रेस व लीग ने विधान सभा की योजना को मंजूर कर लिया। किन्तु केन्द्र में अन्तकालीन सरकार नहीं बन सकी। जब वायसराय ने यह घोषित किया कि कांग्रेस के बिना केन्द्र में अन्तःकालीन सरकार कायम न हो सकेगी, तो मुस्लिम लीग बिगड़ उठी। उसने यह घोषणा की कि वह विधान सभा में शामिल न होगी। इधर वायसराय ने ब्रिटिश मंत्रिमंडल के साथ परामर्श करके कांग्रेस को केन्द्र में अन्तःकालीन सरकार बनाने को बुला लिया। कांग्रेस ने कोशिश की कि लीग भी अन्तः-

कालीन सरकार में शामिल हो जाय। मगर जब वह नहीं मानी, तो उसने सितम्बर १९४६ में अपनी सरकार बनाली।

इसके फौरन बाद वायसराय ने अपने मंत्रिमंडल से सलाह लिए बगैर लीग नेताओं के साथ बातचीत शुरू करदी। यह उचित नहीं था, वायसराय को बीच में डालकर कांग्रेस व लीग के बीच बातचीत शुरु हुई। वायसराय के कहने पर लीग ने अपने ५ आदमी भेजने मंजूर कर लिये।

मेरा विश्वास है कि यदि कांग्रेस ने अगस्त १९४२ में ब्रिटिश साम्राज्यवाद की चुनौती को स्वीकार न किया होता, तो हमारी स्थिति वह नहीं होती, जो आज है। मुस्लिम लीग व अन्य अल्पसंख्यक जातियों को भी वे स्थान प्राप्त न होते जो आज प्राप्त हैं। निस्संदेह अभी विदेशी हकूमत का अन्त नहीं हुआ, किन्तु यह खात्मे का श्रीगणेश जरूर है।

यदि आज हमें आजादी मिल जाय तो हममें उसे सम्भाल रखने की शक्ति होनी चाहिए। इसके लिए रचनात्मक कार्य करना लाज़िमी है। अब तक विश्व में जितनी क्रान्तियां हुई हैं, उन सबका उद्देश्य पुराने संस्थान का नाश करके उसके स्थान पर नए संस्थान को स्थापित करना रहा है। इस तरह की क्रांति में गृहयुद्ध और तानाशाही की गुंजाइश रहती है। लेकिन इससे क्रांति सफल नहीं हो सकती। फ्रांस व रूस की राज्य क्रांति में यही चीज रही। गांधी जी के नेतृत्व में कांग्रेस ने विगत २६ वर्षों से विनाशात्मक और रचनात्मक कार्य साथ साथ किए हैं। आज शासन का भार अपने कन्धों पर लेने के बाद कांग्रेस को गांधी जी के रचनात्मक कार्यक्रम को कार्यान्वित करना चाहिए।

प्रजातन्त्र व अहिंसा

हमने स्वराज्य प्राप्ति के लिए बम व पिस्तौल का प्रयोग तक कर दिया। हमने यह फैसला किया कि हमारी क्रांति खुली होनी चाहिए। कांग्रेस का विधान प्रजातंत्री है। हमारे प्रजातन्त्र का आधार अहिंसा है। अहिंसा व तानाशाही परस्पर विरोधी हैं। अतएव अब यह स्पष्ट हो जाना चाहिये कि हम राजनैतिक प्रजातन्त्र के हामी हैं, और हमारा स्वराज्य भी प्रजातंत्री होगा। इसमें किसी एक व्यक्ति अथवा बड़े परिवार का राज्य न होगा। उसमें किसी खास श्रेणी, धर्म व जाति का भी राज्य न होगा। उसके अनुसार शासन प्रजा द्वारा प्रजा के लिये और प्रजा का होगा।

किन्तु हमने यह भी देखा है कि आर्थिक समानता के बिना राजनैतिक प्रजातंत्र बेकार है। फिर आर्थिक समानता कम्युनिष्ट आधार पर हो सकती है, अथवा प्रजातंत्री आधार पर। कम्युनिस्ट योजना के अनुसार उद्योग धन्धों का केन्द्रीकरण कर दिया जाता है और प्रजातंत्री तरीके के अनुसार विकेन्द्रीकरण। मेरा विश्वास है कि जिस समाज की आर्थिक समानता बड़े-बड़े उद्योग धन्धों पर आश्रित होती है, उसमें राजनैतिक अधिकार मुट्ठी भर लोगों के हाथ में चले जाते हैं। ऐसी चीजों से नौकरशाही व तानाशाही को प्रोत्साहन (शह) मिलता है, उस अवस्था में देश के राजनैतिक व आर्थिक जीवनों पर शासकों का प्रभुत्व स्थापित हो जाता है। इसीलिए मैं पूंजीवाद व कम्युनिज्म दोनों का विरोधी हूं।

प्रजातंत्र को जीवित रखने के लिए हमें ऐसा तरीका ईजाद करना होगा, जिससे कि आर्थिक अधिकार किसी शासक अथवा

शासकों के हाथ में ही केन्द्रित न हो जाय। इसी उद्देश्य में कांग्रेस अब तक उद्योग-धन्धों का विकेन्द्रीकरण करने की बात कहती आ रही है। बंग-भंग के बाद हमारे नेता घरेलू धन्धों का प्रचार करते आ रहे हैं। गांधी जी के आने के बाद यह कार्यक्रम अमल में ला दिया गया है।

अतएव हमें स्पष्ट कर देना है कि हमारे आर्थिक स्वराज्य का अभिप्राय उद्योग-धन्धों का विकेन्द्रीकरण करना है। इसी से हमारी बेरोजगारी की समस्या हल होगी।

उद्योग योजना

कांग्रेस ने सन् १९३९ में उद्योग-योजना समिति पं० जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में नियुक्त की थी। उसने इस संबंध के आंकड़े और तथ्य इकट्ठे किए, लेकिन यह अभी काम में नहीं लाए जा सकते। अभी तो प्रत्येक प्रान्त अधिक-से-अधिक कल कारखाने खोलना चाहता है, हम कपड़े के उद्योग का केन्द्रीकरण करना चाहते थे, लेकिन इस सम्बन्ध में भी प्रान्तीय सरकारों में स्पर्धा हो रही है।

नए कारखाने खोलने के बजाय थोड़े धन से और थोड़े रुपये से चर्खे और कर्घे को उत्तेजित किया जा सकता है और अधिक काम पूरा किया जा सकता है। हमको अभी तय करना चाहिये कि कौन-से उद्योग केन्द्रित और कौन-से अकेन्द्रित रूप में हैं।

घरों और गांवों में अकेन्द्रित उद्योगों में भी मजदूर बिजली काम में लाकर अपनी क्षमता बढ़ा सकते हैं, उससे उद्योग अकेन्द्रित भी रहेंगे और हड़तालों से बरी भी। इन

उद्योगों का सगठन सहयोग के आधार पर ही किया जा सकता है।

हमारी खेती भी बहुत कुछ अकेन्द्रित उद्योगों की तरह रहनी चाहिए, लेकिन खेत विभक्त नहीं होने चाहिएं। एक परिवार के लायक खेत संयुक्त रहना ही चाहिए। अकेन्द्रित उद्योगों से खेती के धन्धे की कमी पूरी होनी चाहिए।

कांग्रेस किसानों और राज्य के बीच में किसी भी बीच के मुनाफाखोर को नहीं रखने के लिए वचनबद्ध है। अभी कांग्रेस महासमिति ने प्रान्तीय सरकारों से जमींदारी का अन्त करने की—उनकी—योजना मांगी थी। इस बारे में कार्य समिति जल्दी मार्ग दर्शक करेगी। युक्तप्रान्त में इस प्रकार का एक बिल तैयार किया जा रहा है।

खाद्य समस्या जो लड़ाई के समय में बहुत खतरनाक हो गई थी, अभी तक भयंकर रूप धारण किए हुए है। हम अभी विदेशों की सहायता पर निर्भर हैं; लेकिन हमें खेती के बारे में खोज करनी चाहिये। उजड़ जमीन में खेती शुरू करके, नहरें बनाकर और पानी की व्यवस्था करके उत्पत्ति बढ़ानी चाहिए। हमें अनाज की फसल और कीमती फसलों को किसानों के लिए समान लाभदायक बनाना चाहिये। अकाल के खतरे से बचने के लिए देश को कुछ स्वावलम्बी क्षेत्रों में बांटकर और उनमें वैज्ञानिक दृष्टि से संतुलित भोजन पैदा करने की व्यवस्था करना चाहिए।

केन्द्र में खाद्य-विभाग हमारे योग्य नेता राजेन्द्रबाबू के हाथ में है। हमें इसमें सन्देह नहीं कि वे हमें वर्तमान कठिना-

इयों से पार ले जायेंगे और भविष्य में हमें विदेशों से मांगने की स्थिति नहीं रहने देंगे।

वर्तमान लड़ाइयां विश्व-व्यापी होती चली जा रही हैं। उनमें कोई भी देश तटस्थ नहीं रह सकता और युद्धकाल में किसी भी देश में नागरिक स्वतंत्रता कायम नहीं रहती। इसलिए प्रजातंत्र-वाद तबतक ठीक तरह से नहीं चल सकता, जब तक युद्ध की जगह आपसी सद्भावना, सहयोग नहीं ले लेते। जब तक ये साम्राज्य हैं, तब तक लड़ाई नहीं मिट सकती।

बोल्शविक रूस को अभी यह सिद्ध करना है कि उसने अपने पड़ौसियों कोकुतरने की जारकालीन नीति छोड़ दी है। इंगलैण्डकी समाजवादी सरकारने अभी अपने साम्राज्य पर कब्जा नहीं छोड़ा है। हिन्दुस्तान में जो क़दम उठाए गए हैं, वे झिझकते हुए हैं, और वे अन्तराष्ट्रीय स्थिति से बाध्य होकर किए गए जान पड़ते हैं।

हमारे स्वतंत्रता आन्दोलन का तकाजा है कि हमारी सामाजिक व्यवस्था शोषण से रहित हो, प्रजातंत्रवादी पर चले और उसका रुख अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग और शांति की ओर हो। कांग्रेस गांधी जी के नेतृत्व में ऐसी समाज रचना की ओर बढ़ रही है।

आज केन्द्र में एक तरह की राष्ट्रीय सरकार है और प्रान्तों में लोक निर्वाचित सरकारें चल रही हैं। जल्दी ही विधान परिषद् होगी, जो देश का नया विधान बनाएगी। स्वतंत्रता सामने दिखाई देती है। अंग्रेजों का इरादा जो भी हो, वे हमें उसे प्राप्त करने से नहीं रोक सकते।

हिन्दुस्तान में ब्रिटिश साम्राज्यवाद की बड़ी ताकत यह है

कि वह अपने घृणित उद्देश्य हिन्दुस्तानियों के जरिये ही पूरा करता है। हिन्दुस्तान हिन्दुस्तानियों के रुपये, साधनों, सैनिकों और बुद्धि बल से जीता गया। हमारी फूट और देश के प्रति गैर वफादारी हमारी सबसे बड़ी कमजोरी है। राजनैतिक गुणों में सबसे बड़ा गुण एकता है और वह अंग्रेजों में अधिक है।

स्वतंत्रता को खतरा

इस समय हमारी स्वतंत्रता का सबसे बड़ा खतरा साम्प्रदायिक मतभेदों से, खास तौर से हिन्दुओं और मुसलमानों के मतभेदों से है। विदेशी इससे लाभ उठा रहे हैं।

हिन्दुस्तान एक देश है

हिन्दू और मुसलमान दो जातियां हैं, यह खयाल करना इतिहास, विज्ञान और भाषा के विरुद्ध एवं अस्वाभाविक है। उनके सामाजिक, राजनैतिक और आर्थिक हित एक हैं। उनमें मिलती जुलती बातें बहुत हैं—और मतभेद बहुत कम एवं ऊपरी हैं। हिन्दुस्तान विदेशों में एक ही गिना जाता है। हिंदुस्तान को दो भागों में विभक्त करने का खयाल प्रतिगामी और उन्नति-विरोधी है। प्रकृति और इतिहास ने जिसे एक बनाया है यह उसे बांटने का प्रयत्न है।

एक परिवार दो धर्म

सिन्ध में मेरे रिश्ते के नाती और नातिनियां हैं जो मुसलमान हैं वे मुझे मेरे हिन्दू नाती—नातनियों की तरह ही प्यार करते हैं। मैं यह नहीं समझता कि मैं हिन्दू होने से हिन्दुस्तानी हूं और वे मुसलमान होने से दूसरी जाति के हैं। इनमें से एक लड़की ने लिखा है "आप कांग्रेस की गद्दी पर विशेष सेवा और

कार्य करते हुए लम्बे अर्से तक बैठे। हम यद्यपि पक्के लीगी हैं, लेकिन हम प्रार्थना करते हैं कि कांग्रेस और लीग में मेल रहे।"

मुसलमानों का भय निराधार

आज मुस्लिम लीग भय और सन्देह की शिकार है एवं मुसलमानों में भी वह इनका संचार करती है। मुसलमान जब यहां आये तो उनकी संख्या हजारों में थी। उनको तब हजारों हिन्दुओं का भय न था। वे तब भयभीत न थे। लेकिन आज जब उनकी संख्या देश की कुल आबादी की एक चौथाई है वे अल्पसंख्यक नहीं हैं।

मौलाना आजाद ने कहा है—"मुसलमान अल्पसंख्यक नहीं हैं। अल्पसंख्यक का अर्थ है एक छोटा सा दल जो अपनी रक्षा अपने आप पास के बड़े दल से न कर सके। ग्यारह बड़े प्रांतों में से चार में मुस्लिम बहुमत है। ब्रिटिश बिलोचिस्तान पांचवां प्रान्त है जहां वे बहुमत में हैं। तब वे अल्पसंख्यक के ख्याल से क्यों पीड़ित होते हैं।

इसलिए जो हिन्दू उन्हें विदेशी समझते हैं तो वे स्वतंत्रता के शत्रु हैं। इसी प्रकार यदि मुसलमान विदेशी जैसा आचरण करते हैं तो वे अपनी जाति और राष्ट्र का अहित करते हैं।

धर्म पर लड़ना बर्बरता है। हिन्दुओं मुसलमानों की वर्तमान लड़ाई धार्मिक नहीं, साम्प्रदायिक है, उसका राजनीतिक या आर्थिक प्रश्नों से कोई सम्बन्ध नहीं है।

मैं कह चुका हूं कि कांग्रेस को देश के हित की हानि करके मुसलमानों या किसी दूसरे वर्ग के सामने नहीं झुकना चाहिये।

हम भूतकाल में इस तरह झुके उसी के कारण ये मुसीबतें पैदा हुई हैं। हमें राष्ट्रीयता और प्रजातंत्रवाद पर साम्प्रदायिक और अप्रजातन्त्रीय सिद्धान्तों की जीत नहीं होने देनी चाहिये।

इस प्रकार मुझे कोई संदेह नहीं कि कांग्रेस ने पृथक निर्वाचन स्वीकार करके भूल की थी। यदि हम तात्कालिक मुसीबत को टालने के लिये राष्ट्रीयता और प्रजातन्त्रवाद की जड़ काट देंगे तो हम देश को धोखा देंगे, इसलिये हमें भविष्य में ऐसा अप्रजातन्त्री समझौता न करना चाहिए।

पूर्वी बंगाल का भयानक कांड

"हाल में मैं पूर्वी बंगाल तथा बिहार गया था। मामले की गंभीरता पर लीपापोती करना मेरे लिए एक अपराध होगा। ऐसा करने से मैं कर्तव्य-च्युत हूंगा। जो लोग पूर्वी बंगाल के भयानक कांड के लिए जिम्मेदार थे उन्होंने ऐसी धारणा उत्पन्न की कि पाकिस्तान जोर-जबर्दस्ती से कायम हो सकता है—'लड़के लेंगे पाकिस्तान, मारके लेंगे पाकिस्तान!' यदि जनता के दिमाग में एक बार यह बात बैठ जाय कि सांप्रदायिक समस्या जोर-जबर्दस्ती से हल हो सकती है तो वह एक बहुत दुर्भाग्यपूर्ण दिन होगा। यह केवल भारत के लिए ही नहीं बल्कि इस मामले से संबंधित सब जातियों के लिए दुर्भाग्य की बात होगी।

जो लोग सामूहिक धर्म-परिवर्तन, बलात विवाह आदि का प्रचार कर रहे थे आग के साथ खेल रहे थे। वास्तव में मुझे यह ज्ञात है कि इस निर्मम हिंसा तथा जोर-जबरदस्ती के कारनामों के अवसरों पर मुल्ला लोगों ने अध्यक्षता की। मैं यहां फिर वही बात दुहराऊंगा जो कि पूर्वी बंगाल से लौटने के बाद मैंने अपने एक वक्तव्य में कही थी।

कुछ लोग समझते हैं कि प्राण-हानि ही मानव पर सबसे बड़ी विपत्ति है। लेकिन आत्मसम्मानी व्यक्तियों के लिए सबसे बड़ी विपत्ति पिस्तौल के डर से अपना धर्म छोड़ने की है। यदि वे सब लोग जिनका बलात धर्म-परिवर्तन किया गया है और सब स्त्रियां जो जबरन अपहृत कर दूसरों के साथ व्याही गई हैं, मार डाली जाती तो मेरी राय में यह पाशविकता के आगे झुकने से कम दुःखजनक बात होती।

अत्यन्त उत्तेजना के अवसर पर शिक्षित तथा भावुक व्यक्ति भी अवांछित भावनाओं के शिकार हो सकते हैं। तब साधारण जनता का तो कहना ही क्या है। अतएव जो कोई हिंसा का, विशेषकर पूर्वी बंगाल की सी हिंसा का प्रचार करता है, वह चाहे कोई व्यक्ति हो, दल हो या संस्था हो राष्ट्र को सबसे अधिक हानि पहुंचाता है। वह मानवता के विरुद्ध कार्य करता है।

वास्तव में, सांप्रदायिक हिंसा में चाहे वह उत्तेजनात्मक हो या प्रतिशोधात्मक, केवल गरीब तथा असहाय लोग शिकार होते हैं। दंगों को कराने वाले साफ बच जाते हैं। दो राष्ट्रों के बीच युद्ध की भांति नागरिक झगड़ों में भी हिंसा का निर्मम तथा अनियन्त्रित प्रयोग केवल परमाणुबमके समान किसी विध्वंसकारी चीज को जन्म देगा जो कि हिन्दू व मुसलमान दोनों का खात्मा कर देगा।

केन्द्रीय सरकार की असफलता

केन्द्रीय सरकार के बंगाल में हस्ताक्षेप करने में असफल होने के कारण प्रांत प्रायः स्वतन्त्र होगये। इस परिस्थिति में

बिहार प्रांत कलकत्ता में बिहारियों पर होने होने वाले अत्याचारों के विरुद्ध आवाज उठा सकता था । बिहार सरकार को यह अधिकार भी था कि वह पूर्वी बंगाल में हिन्दुओं पर जो जुल्म हो रहे थे और जो बंगाल सरकार की सहमति के अनुसार होते जान पड़ते थे, बंगाल सरकार को चेतावनी देती।........यदि केन्द्रीय सरकार प्रांतों की आंतरिक सुरक्षा के लिए अपने को उत्तरदायी बनाने में असफल होती है तो मेरी स्पष्ट राय है कि भविष्य में लोकप्रिय प्रांतिय सरकारें ऐसे मामलों को परस्पर हल करें। ऐसा करने से शायद वे इस बातकी अपेक्षा अच्छे परिणाम पर पहुंचेंगी कि दोनों जातियां कानून को अपने हाथों में लेकर प्रतिशोध पर उतर जांय।

हिंसा कुत्सित तथा व्यर्थ है और संगठित हिंसा तो और भी बुरी है। जिस उद्देश्य से यह की जाती है वह स्वयं ही इसके परिणाम स्वरूप नष्ट हो जाता है। यदि मौजूदा हिंसात्मक कांड जारी रहे तो लीगी नेता अपने अनुयायियों को न रोक सकेंगे। कांग्रेस भी लोगों को रोकने में समर्थ न हो सकेगी भले ही उसने जनता को हिंसा पर उतारू होने से रोकने का अधिक से अधिक प्रयत्न किया है। तब भारत सांप्रदायिक धर्मांध व्यक्तियों के दो सशस्त्र शिविरों में विभक्त हो जायगा और अंगरेज अपनी संगीनें लेकर चौकसी के लिए खड़े रहेंगे। तब भारत की स्वतंत्रता का दिन अनिश्चित काल के लिए टल जायगा।

हिन्दू-बहुसंख्यक प्रांतों में मुसलमानों की जान व इज्जत की और मुसलमान-बहुसंख्य प्रांतों में हिन्दू अल्प संख्यकों की जान व इज्जत की रक्षा होनी चाहिए।

श्री जिन्ना के पाकिस्तान-स्वप्न में भी, यद्यपि उसने समस्या

को इस भीषण रूप में उपस्थित कर दिया है, अल्पसंख्यकों की समस्या का कोई हल मौजूद नहीं है।……यदि यह बात स्वीकार कर भी ली जाय कि मुसलमानों का अपना धार्मिक राज्य होना चाहिए तब भी उन्हें इस इस्लामिया हकूमत को अपने प्रदेश के दूसरे अल्पसंख्यकों-सिखों, हिन्दुओं व दूसरे लोगों पर नहीं थोपने दिया जा सकता। सारे भारत में मुसलमान जिस प्रकार अपने लिए आत्मनिर्णय का अधिकार चाहते हैं उसी पकार इन अल्पसंख्यकों को भी होना चाहिए।

आगे चलकर राष्ट्रपति ने कहा था कि सांप्रदायिक वैमनस्य के विष को राष्ट्र के जीवन में और प्रवेश नहीं करने दिया जा सकता। जनता का एक भाग हमें दूसरों के अधिकारों का बलिदान करने के लिए विवश नहीं कर सकता। समस्या आसानी से हल हो सकती है यदि हम यह स्पष्टतया स्वीकार करलें कि भारत में दो राष्ट्र हैं। वे हैं दोनों या सब जातियों के शोषक तथा शोषित। हिंदुओं तथा मुसलमानों का एक सर्वसामान्य शत्रु है— वह है गरीबी, बीमारी तथा अशिक्षा। यदि हम उसे मंजूर करलें जो कि हम वास्तव में है तो हमें आपस में लड़ने की जरूरत नहीं।"

नरेशों को यह अनुभव कर लेना चाहिए कि भारत अर्द्ध स्वतंत्र तथा अर्द्ध पराधीन नहीं रह सकता और स्वतंत्र भारत में राजा लोग उस तरह कार्य नहीं कर सकते जिस तरह कि इस समय कर रहे हैं। इस समय तो विदेशी ताकत के सहारे देशी नरेश टिके हैं और विदेशी सत्ता उनसे अपने साम्राज्य-शाही स्वार्थ की पूर्ति कर रही है। देशी नरेशों को पोलिटिकल डिपार्टमेंट के इशारों पर चलना पड़ता है। जिन लोगों को

अपनी प्रजा की भलाई का संरक्षक होना चाहिए था वे विदेशी सत्ता की कठपुतलियां बन गये।

इस तरह देशी राज्यों की प्रजा दुहरी गुलामी में बंधी हुई है। उसे अभी भी अपने नरेशों के प्रति कुछ प्रेम है। राजनीतिक भारत में ये नरेश रह सकते हैं बशर्ते वे प्रजातंत्रात्मक तथा वैधानिक नरेश बनकर रहें। इस बारे में उन्हें इंगलैंड के बादशाह से शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए।

नेहरू जी सबसे महान् देश-भक्त हैं और उनको नीचा दिखाने की कोशिश कर काशमीर के दीवान ने सारे भारतीय राष्ट्र को अपमानित किया। यह भी कम दुःख की बात नहीं कि हैदराबाद जो कि भारत में प्रधान रियासत होने का दावा करता है, अपनी प्रजा को उन नागरिक अधिकारों से भी वंचित किये हुए है जो कि ब्रिटिश साम्राज्यशाही तक को मजबूर होकर देने पड़े हैं।"

छुआ छूत समस्या

यह समस्या प्रधा- नतः हिन्दू जाति से सबंधित है। लेकिन यह इतनी अमानवीय है कि इससे हमारा सारा राष्ट्रीय जीवन कलुषित हो जायगा। जब हमारे समाज में ही ऐसी असमानता हो तब हमारी स्वतंत्रता व समानता की मांग में अधिक जोर नहीं रह जाता।"

तीन बड़े और चार बड़े हमेशा रहेंगे, और इसी से खतरा है। साधारण चोर-डाकुओं की भांति अंतराष्ट्रीय चोर-डाकू भी कभी न कभी झगड़ ही पड़ते हैं, और जब वे झगड़ते हैं तो पृथ्वी के आधार तक को हिला डालते हैं, जैसा कि वे पिछले तीस वर्षों में दो दफा कर भी चुके हैं। जब एक

और प्रजाओं का अस्तित्व रहेगा तब तक संघर्ष और युद्ध भी होते रहेंगे। इसके अलावा प्रजातंत्र की भांति एक अंतर्राष्ट्रीय संस्था का संचालन ठीक ठीक करने के लिये संस्था सम्बन्धी और बाह्य प्रबन्ध करना ही आवश्यक नहीं है। कानून और शासन विधान, अंतर्राष्ट्रीय अदालतें और सेनाएं भी अपना महत्व रखती हैं, परन्तु जिस प्रकार मानवी वासनाओं को पहले आत्म संयम द्वारा नियंत्रण में रखा जाता है और फिर बाहरी साधनों का उपयोग किया जाता है इसी प्रकार राष्ट्रों को वासनाओं और आकांक्षा का हृदय परिवर्तन द्वारा नियंत्रण करना आवश्यक है।

भारत एक ऐसा राष्ट्र समुदाय चाहता है जिसमें सभी राष्ट्रों को चाहे वे छोटे हों या बड़े, महत्वपूर्ण हों या महत्व-हीन, स्वतंत्र हों या अन्तर्राष्ट्रीय सुरक्षा के अन्तर्गत, प्रजातंत्रीय व्यवस्था के समान ही ऐक-एक वोट का एकसा अधिकार हो। जिस प्रकार हम देश को आंतरिक राजनीति के मामले में एक या कुछ आदमियों की तानाशाही के खिलाफ हैं, उसी प्रकार हम अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के क्षेत्र में भी एक शक्तिशाली राष्ट्रों के गिरोह की तानाशाही के खिलाफ हैं। असमान अन्तर्राष्ट्रीय दर्जे के साथ प्रजातंत्रीय संस्थाओं को कायम रखना बड़ा कठिन है।

गत महायुद्ध नैतिक स्वतंत्रताओं के लिये लड़ा गया बताया जाता है, परन्तु यह युद्ध लड़ा जा रहा था, तभी मित्रराष्ट्रों ने व्यवहार में उन स्वतंत्रताओं का खंडन किया। नैतिक सिद्धान्तों के विरुद्ध आचरण करते समय युद्ध जनित अवस्था का बहाना लिया गया परन्तु अब युद्ध समाप्त होने के
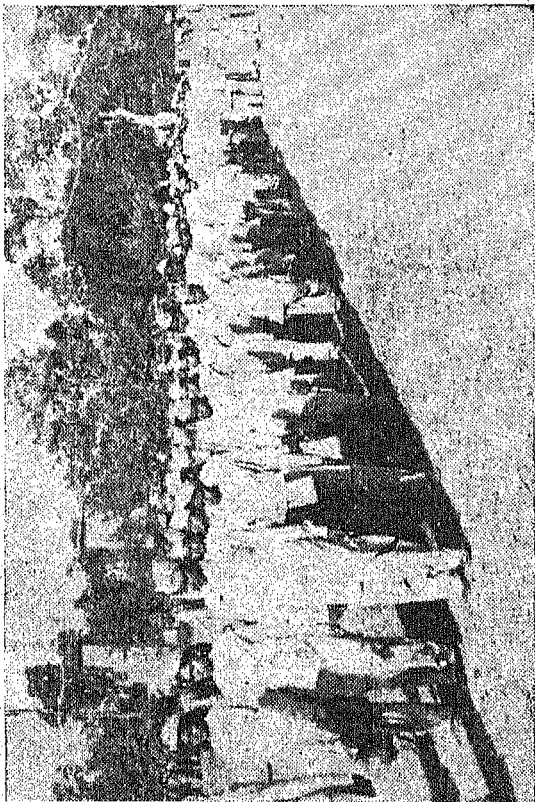
आजाद हिन्द फौज की देश सेविकायें

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस

श्री सी० राजगोपाचारी
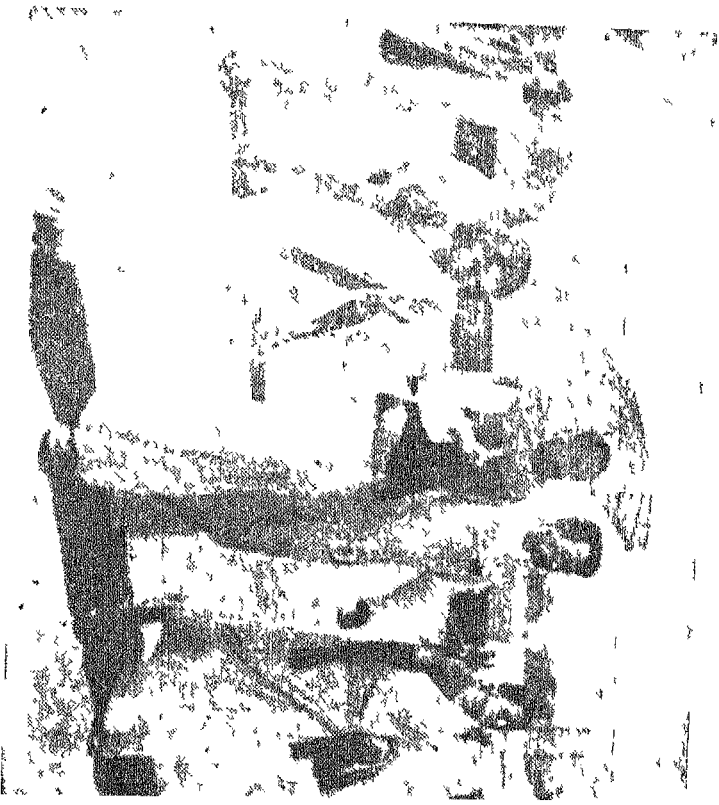
पंडाल में जाते हुए

बाद भी भौतिक स्वतंत्रताएं उसी प्रकार सद्यः जात निर्जीव शिशु की भांति निर्जीव है। शांति परिषद में शांति नाम मात्र को नहीं है और संयुक्त राष्ट्रीय संघ में विभक्ति के दर्शन हो रहे हैं। सभी राष्ट्र एक तीसरे महायुद्ध की आशंका से भयभीत हो रहे हैं। उधर बड़े राष्ट्र युद्ध के कारणों को दूर करने की बात सोचने के बजाय अपेक्षाकृत अधिक बड़े और अधिक उत्तम परमाणु बम बनाने की चिन्ता में लीन हैं।

पराजित राष्ट्रों के साथ जैसा व्यवहार किया जा रहा है उससे बुरे कर्मों और भय, रोष और प्रतिहिंसा की भावनाओं को जन्म मिल रहा है। जिस प्रकार किसी समाज विरोधी व्यक्ति के सुधार के लिये दण्ड और प्रतिहिंसा अच्छी औषधि नहीं है, उसी प्रकार राष्ट्रों के लिये भी वह अच्छी औषधि नहीं है और जिस प्रकार किसी व्यक्ति के पापों का दण्ड उसके पुत्र को देना अन्यायपूर्ण है और अमानवोचित है, उसी प्रकार बल्कि उससे भी अधिक वर्गों के पापों का दण्ड उनकी आने वाली नस्लों को देना अन्यायपूर्ण है। पराजित राष्ट्रों को अपने पांवों पर खड़ा होने और उन्हें स्वस्थ, स्वाभाविक, राजनैतिक और आर्थिक जीवन व्यतीत करने देना चाहिए।

भारत और अन्य राष्ट्र इस समय विदेशी शासन के कारण बाहरी देशों से जो सम्पर्क स्थापित किए गए हैं उनकी अपेक्षा स्वतंत्र भारत अधिक स्वाभाविक और अपनी भौगोलिक आवश्यकताओं के अधिक अनुरूप अन्तर्राष्ट्रीय सम्पर्क स्थापित करेगा। वास्तव में अब तक तो अन्य देशों के साथ हमारा स्वतन्त्र सम्पर्क था ही नहीं। हम अब तक तो ब्रिटिश साम्राज्यवाद के रथ से बंधे हुए थे। जो कोई ब्रिटेन का मित्र था, भारत

का भी मित्र था, जो कोई ब्रिटेन का शत्रु था, भारत का भी शत्रु था। ब्रिटेन के अन्तर्राष्ट्रीय सम्पर्कों के कारण भारत को दो बार युद्ध में घिसटना पड़ा जिससे उसे धन जन की अपार हानि उठानी पड़ी। स्वतंत्र भारत को इस भारी बोझ को उठाकर फेंक देना चाहिए। हम लोगों की अपनी निजी विदेशी नीति होनी चाहिए।

हम तो इस सिद्धांत में विश्वास रखते हैं कि प्रत्येक राष्ट्र को अपनी पसन्द की सरकार चुनने का अधिकार है और किसी राष्ट्र को उसके इस अधिकार से वंचित करने का अधिकार नहीं है। हम रूस के कम्यूनिज्म के प्रयोग, ब्रिटेन के प्रजातन्त्रिक साम्यवादी प्रयोग और अमेरिका के व्यक्तिगत धंधे को एक समान दिलचस्पी के साथ देखते हैं। हमें इनमें से किसी की नकल करने की जरूरत नहीं है। हां, उनमें जो जो अच्छी बातें हैं, उन्हें हमें जरूरत से ले लेना चाहिये। हम इन महान राष्ट्रों के साथ बराबरी के दर्जे की मैत्री का सम्बन्ध स्थापित करना चाहते हैं।

संसार के समाचार पत्रों में इसके विरोध में जो प्रचार हो रहा है, हमें उसकी ओर सतर्क रहना चाहिये। वैसे हम सभी राष्ट्रों के साथ मैत्री का सम्पर्क रखेंगे, पर आस्ट्रेलिया और एशिया के साथ हमारा घनिष्ठ सम्बन्ध रहेगा। चीन और जापान के साथ हमारा पुराना सांस्कृतिक और ऐतिहासिक सम्बन्ध है और इस समय भी पण्डित जवाहरलाल नेहरू के उद्योग के फलस्वरूप, जिनका हमारा विदेश मन्त्री होना ठीक ही हुआ है, चीन के साथ हमारा मैत्री का सम्बन्ध है। परन्तु अपने इस पड़ौसीसे हम इतने अलग पड़े हुए हैं कि चीनका तार

यहां लन्दन होकर २४ घण्टे में आता है। इस अवस्था का अन्त होना चाहिए।

जापान भी जब अपनी साम्राज्यवादी मृग-मरीचिका से त्राण पाकर स्वतन्त्र प्रजातन्त्रीय राष्ट्र के रूप में सामने आयेगा तो हम उससे मैत्री का सम्बन्ध स्थापित करेंगे। अन्य जातियों की उसके सम्बन्ध में क्या धारणा है, इससे हमें कोई सरोकार नहीं चाहे वे जातियां पूर्व की हैं, चाहे पश्चिम की।

इण्डोनेशिया और पूर्वी द्वीपों के साथ भी हमारा पुराना सांस्कृतिक सम्बन्ध है। इन देशों के साथ हमारे व्यापार की वृद्धि दोनों के लाभ का साधन होगी। भारत और आस्ट्रेलिया के घनिष्ठतर सम्पर्क से दोनों को लाभ ही लाभ होगा, हानि नहीं होगी। मध्य एशिया और मध्य-पूर्व के साथ हमारा सांस्कृतिक सम्बन्ध है। हमारी आबादी का एक-चौथाई इन देशों के निवासियों की भांति ही पैगम्बर के धर्म का अनुयायी है। हमारा सम्पर्क घनिष्ठतर होना चाहिये।

अन्तर्राष्ट्रीय मामलों पर अब तक हमारी संस्था ने अवसर आने पर अपने विचारों को स्वच्छन्द रूप से व्यक्त किया है। परन्तु अब जब कि हमारे प्रतिनिधि सरकार में हैं, हमें अधिक संयम से काम लेना पड़ेगा। हमें यह समझ लेना होगा कि कोई गैर-जिम्मेवार बात मुंह से निकालने का परिणाम एक ऐसे उत्तरदायित्व का भार वहन करना हो सकता है, जिसके लिये हम अभी तक तैयार नहीं है। इसलिए हमें आत्म-संयम और गम्भीरता का आचरण करना चाहिये।

चाहे भारत के चुने हुए प्रतिनिधियों की इच्छा के विपरीत भारत में ब्रिटिश सेनाओं की उपस्थिति की बात हो, चाहे विदेशी

धन द्वारा प्रचार कराके हम लोगों में फूट पैदा कराने की बात हो, और चाहे हमारी भूमि पर पुर्तगीज और फ्रेंच अधिकार की बात हो—इन सबका अर्थ एक ही है, मौलिक स्वतन्त्रता का अपहरण। यदि अंग्रेज भारत छोड़ कर जाने को तैयार हैं, जैसा कि वे स्वय कह चुके हैं, तो पुर्तगाल के अधिकारियों का यह दावा करना कि गोवा हजारों मील दूर पर स्थित उनके देश का एक अंग है, वाहियात सी बात करना है।

दक्षिण अफ्रीका में हमारे देशवासियों की हैसियत के मामले ने संयुक्त राष्ट्रीय संघ के सामने आने के कारण अन्तर-राष्ट्रीय प्रसिद्धि प्राप्त करली है। और इसका श्रेय भारतीय प्रतिनिधि मण्डल को है। मैं आप लोगों की ओर से दक्षिण अफ्रीका के प्रवासी अपने देशवासियों को आश्वासन देना चाहता हूं कि उनके इस पुण्य संग्राम में सारा भारत उनके साथ है। मैं यह भी कह देना चाहता हूं कि इस संघर्ष की ओर संसार की सभी अश्वेत और शोषित जातियों की दृष्टि लगी हुई है। दक्षिण अफ्रीका की भांति केनिया और तंगानिका में भी इसी प्रकार का संघर्ष चल रहा है।

बरमा और लंका तो हमारे पड़ोसी हैं। सीलोन और भारत में थोड़ा-सा अंतर है, और बर्मा और सीलोन-दोनों ने बौद्ध-धर्म भारत से लिया। कांग्रेस का दृढ़ संकल्प है कि सीलोन और बर्मा के मैत्री के सम्पर्क को दृढ़ किया जाय। गत मार्च मास में कांग्रेस कार्यकारिणी ने श्री आर्य नायकम को सीलोन भेजा जिससे वहां के मंत्रियों से भारतीय मजदूरों की जटिल समस्या के सम्बन्ध में बातचीत कर सकें। पण्डित जवाहरलाल नेहरू और चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य को समझौते की बात

आगे बढ़ाने के लिए वहां भेजने की बात थी, पर अन्य आवश्यकताओं के कारण वे न जा सके। सीलोन और भारत का भाग्य एक ही है। भारत से अलग रहकर सीलोन साम्राज्यवादी शक्तियों के विश्वव्यापी मोर्चे में फंस कर विलीन हो जायगा।

रहा बर्मा, सो हम लोगों का स्वयं ही शोषण किया जा रहा है, हमें ऐसा कोई काम नहीं करना चाहिये, जिसे हमें दूसरों का शोषण करना अपराधी ठहराया जाय। बर्मा प्रवासी भारतीयों को बर्मा निवासियों के साथ दूध शक्कर की तरह हिल-मिल कर रहना चाहिये।

हमें यह अच्छी तरह समझ लेना चाहिये कि कांग्रेस वास्तव में क्या है। हम लोग कांग्रेसी सरकारों की बात सुनते हैं। यह नाम भ्रमक है। ये तथाकथित कांग्रेसी सरकारें लोकप्रिय प्रजातंत्रीय सरकारें मात्र हैं। कांग्रेस ने देश की जनता को शासन भार वहन करने में समर्थ बनाया है। कांग्रेस प्रजातंत्रीय संस्था है, और वह भारत की जनता का प्रतिनिधित्व सेवा बलिदान और कष्टों द्वारा करती आ रही है। इसका अन्यथा स्वभाव ही न था, क्योंकि कांग्रेस को एक विदेशी शक्ति को उसके अधिकार और शक्ति से वंचित करना था। हमें यह अच्छी तरह समझ लेना चाहिये कि कांग्रेस स्वयं सरकार नहीं है। चूंकि यह स्वेच्छा से सेवाएं अर्पित करने वालों का संगठन है, इसलिए अपने अनुशासन अथवा आदेश-पालन के लिए यह मजिस्ट्रेट सिपाही या सैनिक पर निर्भर नहीं करती बल्कि एकमात्र अपने सदस्यों की स्वेच्छा-पूर्ण वफादारी से काम करती है। ऐसा संगठन कारगर रूप में काम करे इसके लिए एकता और अनु-

शासन आवश्यक है। एकता तानाशाह व नौकरशाह द्वारा लादी नहीं जा सकती, बल्कि सदस्यों द्वारा जान-बूझकर अपने निजी एवं दलगत हितों को सामूहिक हितों के सामने दरगुजर करने से हो सकती है। मैं यह नहीं कह सकता कि आपस में मतभेद या कांग्रेस में दल हों, किन्तु पूरे संगठन के प्रति वफादारी सर्वोपरि होनी चाहिये। जहां तक अनुशासन का सम्बन्ध है, वह भी अपने आप लादा हुआ होना चाहिए। और हमें ऐसी पराम्परा बननी चाहिए जिससे अनुशासन-भंग असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य बन जाय। सत्ता या संगठन पर हावी होने के लिए स्पर्द्धा नहीं होनी चाहिए। ताकत तो सेवा द्वारा प्राप्त करनी चाहिए और अधिक सेवा इस्तेमाल की जानी चाहिए।

विदेशी साम्राज्यवाद से लड़ते हुए हमने आन्दोलन व लड़ाई के कुछ ढंग अपना लिये हैं। चूंकि उनसे भूतकाल में हमें लाभ हुआ है, हम इसलिए उन्हें हमेशा के लिये उपयोगी समझ सकते हैं, लेकिन आज जब हम अपने व्यवस्थापकों और मंत्रियों को बदल सकते हैं तब सीधी कार्रवाई या संघर्ष का सवाल ही नहीं उठना चाहिए। प्रान्तों और केन्द्रीय सरकार के हमारे मन्त्रियों को परेशानी में डालने वाली बहुतेरी राजनैतिक और शासन-सम्बन्धी समस्याएं हैं। अतः उनके प्रति हमें अनुदार न हो सहानुभूति शील होना चाहिए। हमारी आलोचना, इसलिए विधायक और सहानुभूति पूर्ण हो, विनाशक हर्गिज नहीं।

आज जैसी हालत है उसमें शासकों को अपने कर्तव्य पालन के लिए काफी सत्ता होनी चाहिए। जो व्यक्ति या संस्थाएं गड़-बड़ को प्रोत्साहन देते हों उनसे समाज की रक्षा करना आवश्यक है। ऐसे व्यक्तियों व ऐसी संस्थाओं से नागरिकों की रक्षा करना

सरकार का आवश्यक कर्तव्य है। अतः राष्ट्रीय सरकार यदि अपने कर्तव्य का अच्छी तरह पालन करना चाहे तो उसे आवश्यक सत्ता होनी ही चाहिए। यह जरूर है कि सरकार में जो लोग हैं वे भी यह न भूलें कि वे जनता के मालिक नहीं सेवक हैं और उन्हें कांग्रेस तथा देशवासियों के प्रति वफादार रहना चाहिए।

कांग्रेस-विधान में संशोधन के लिए कांग्रेस महासमिति द्वारा नियुक्त समिति ने सुझाव पेश किये हैं, यदि किसी कारण-वश तत्काल उन्हें काम में न लाया जा सके तो उसने कुछ दर्मियानी सुधार सुझाये हैं जिनसे हमारे चुनावों को सुधारा जायगा और उनमें होने वाली बेईमानी, पदों की स्पर्धा एवं हिंसा को रोका जायगा।

पिछले युद्ध ने आदर्शवाद को नष्ट कर लोगों को दीवाना बना दिया है और हर जगह चोर बाजार यानी बेइमानी के ढंग पैदा कर दिये हैं। यह सब शर्मनाक है। इसे हमें मिटाना है। यह हमारा सौभाग्य है कि इस सदी के हम लोगों को एक आदर्श कार्य के सहारे बढ़ने का अवसर मिला है। यह आदर्श कार्य यही नहीं है कि विदेशी जुए से अपने देशवासियों को आजाद करना है। ऐसा तो इतिहास में अनेक राष्ट्रों को करना पड़ा है। हमारा अनोखापन इस बात में है कि अपनी आजादी हमें अहिंसात्मक एवं सत्यमय उपायों से प्राप्त करनी है और नैतिक साधनों से उच्च उद्देश्य प्राप्त करने का काम करना है। यह हमें नहीं भूलना चाहिए कि आज मानव-सम्प्रदाय को अपने सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, जातिगत और सांस्कृतिक-झगड़े-बखेड़ों का कोई शान्ति पूर्ण हल ढूंढना होगा नहीं वह नष्ट हो जायगा। हिंसापूर्ण हल इसका कोई नहीं हो सकता।

हिन्दुस्तान ने इसका उपाय ढूंढ निकाला है और किसी हद तक उसका ऐसे नेतृत्वमें प्रयाग भी किया है जो अनेक सदियोंमें कभी कदात ही प्राप्त होता है। यह एक नया साधन है। इसमें खादियां भी रही हैं, लेकिन इतिहास में कोई और क्रान्ति ऐसी नहीं हुई जिसमें भारतीय क्रांति के से कम जान माल की हानि, जीवन की अस्त व्यस्तता तथा घृणा पैदा हुई हो। अतः हमारे प्रयत्न को तत्काल सफलता मिले या नहीं, यह हम न भूलें कि हम एक अच्छे काम में लगे हुए हैं जिसमें अंतिम रूप से असफलता हो ही नहीं सकती। अलबत्ता उद्देश्य की सफलता के लिए काम करने वालों का अच्छे व ऊंचे दर्जे का होना आवश्यक है। दासता से न अच्छापन आता है, न महानता। लेकिन प्रकाश के आते ही सदियों की दासता दूर की जा सकती है। भारत में वह प्रकाश हो चुका है, हमें उसे बराबर प्रकाशमान रखना चाहिए और उसका अनुसरण करना चाहिए तो हमारा कल्याण ही कल्याण है।

वन्दे मातरम् !

अधिवेशन का दूसरा दिन

सात घंटे निरन्तर कार्रवाई के बाद कांग्रेस का मेरठ अधिवेशन रविवार को संध्या समय सात बजे समाप्त हो गया। पहले दिन के बचे हुए सातों प्रस्ताव एक-एक कर के लिये गये और सर्वसम्मति से स्वीकार कर लिये गये।

सब से अधिक महत्वपूर्ण प्रस्ताव देशी रियासतों, कांग्रेस घोषणापत्र और साम्प्रदायिक झगड़ों के सम्बन्ध में थे। साम्प्रदायिक झगड़ों के प्रस्ताव पर बोलते हुए चार प्रसिद्ध नेताओं—डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद, मौलाना अबुल कलाम आजाद, पंडित जवाहरलाल नेहरू तथा खान अब्दुल गफ्फार खाँ—ने मुस्लिम लीग द्वारा फैलाये जाने वाले साम्प्रदायिक विष की घोर निन्दा की और कांग्रेस से अपील की कि चूंकि वह हिन्दुओं और मुसलमानों दोनों का प्रतिनिधित्व करती है उसे हिन्दुस्तान का विनाश करनेवाले इस विप के शमन का फौरन प्रबन्ध करना चाहिये और अपनी उस मर्यादा की रक्षा करनी चाहिये जो उसे समस्त हिन्दुस्तानियों की सहायक होने के नाते मिली है।

आज कांग्रेस का वह चुनाव-घोषणापत्र भी सर्वसम्मति से स्वीकार कर लिया गया जिसमें कहा गया है कि जनता के लिए असली स्वराज्य तभी होगा जब प्रजातन्त्रात्मक सत्ता का विस्तार राजनैतिक ही नहीं, सामाजिक और आर्थिक क्षेत्र में भी होगा। उस समाज में शोषण को स्थान नहीं मिलेगा और व्यक्तिगत स्वतन्त्रता के विकाश के लिए पूर्ण अवसर प्रदान किया जायगा।

मेरठ, २४ नवम्बर। आज यहाँ काँग्रेस के खुले अधिवेशन में कुल ७ प्रस्ताव स्वीकृत हुये, जो दक्षिण अफ्रीका और पूर्वी अफ्रीका के भारतीयों, इण्डोनेशिया की प्रजातन्त्र सरकार को बधाई, देशी रियासतों, काँग्रेस घोषणापत्र, साम्प्रदायिक झगड़े और काँग्रेस के विधान में परिवर्तन के बारे में थे।

पहले, तीन प्रस्ताव राष्ट्रपति द्वारा पेश किये गये और सर्वसम्मति से स्वीकृत हुए।

रियासत सम्बन्धी प्रस्ताव डा० पट्टाभि सीतारमैय्या द्वारा हिन्दुस्तानी में पेश किया गया। प्रस्ताव पेश करते हुए उन्होंने कहा कि २० वर्ष पहले नेतागण समझते थे कि रियासतों का मामला पेंचीदा है, अतः उसमें हाथ न डालना चाहिये, लेकिन हालत में ऐसी तब्दीली हो गयी है कि दोनों गाड़ी रियासत और ब्रिटिश भारत की एक साथ आ गयी हैं और तेजी से चल रही हैं। बड़ी-बड़ी रियासतों को चाहिए कि वे हालत देख कर तबदीली करें। भारत की ५६२ रियासतों में से केवल २ रियासतें—कोचीन और साँगली ने ही ऐसा किया है।

कई रियासतें आजकल जबरन हुकूमत चलाती हैं और जनता को दबाती हैं। यह रियासत के राजा ही नहीं करते, भारत का राजनीतिक विभाग (पोलीटिकल डिपार्टमेण्ट) ऐसा करता है। दतिया का उदाहरण ताजा है। रियासतों की प्रजा गुलाम की भी गुलाम है।

राजनीतिक विभाग वाइसराय के हाथ होता है, लेकिन नाम के लिए उनके सेक्रेटरी को दे दिया जाता है। पर्दे के पीछे ये ही सब काम करते हैं। कहा जाता है कि केन्द्र में अस्थायी राष्ट्रीय सरकार बनी है, लेकिन पूरी हुकूमत उसके हाथ में नहीं

आयी है। रियासतों के सम्बन्ध में जो बीमारी है वह राजनीतिक विभाग की वजह से है। रियासतों की प्रजा से सलाह न लेकर राजा अपनी योजनाएं—जैसे रियासतों को एक में मिलाने की योजना (मर्जर स्कीम) तथा संघ, (कानफेडेरेशन) बनाते हैं। यह सब जबराना हुकूमत को मदद देने के लिए की जाती है।

विधान परिषद् में समझौता-समिति की जो नियुक्ति वाइसराय ने की है उसमें जब तक जनता के प्रतिनिधि न होगे तब तक हम इसे नहीं मान सकते।

राजाओं का प्रस्ताव है कि ५६२ रियासतों का एक संघ बनाया जाना चाहिये। जिसका ताल्लुक केन्द्रीय सरकार से रहे। यह मिलावट जनता के हितों के लिये कदापि नहीं की जा रही है बल्कि उन रियासतों के शासक आपसी समझौता कर रहे हैं। इस प्रकार के योग से समस्या और भी जटिल बन जायगी। रियासतों की प्रजा बातचीत चलाने वाली समिति को तब तक नहीं मानेगी जब तक उसमें उनके अपने प्रतिनिधि नहीं होगे।

डा० पट्टाभि आगे बोले कि अब समय आ गया है जब कॉंग्रेस रियासतों की प्रजा की समस्या की ओर से उदासीन नहीं रह सकती है। परन्तु अगला कदम क्या हो, इसका निर्णय पूरे सोच विचार के बाद ही किया जा सकता है। स्वतन्त्रता केवल देश के एक भाग को ही नहीं मिलनी चाहिए। सारे भारत को स्वतन्त्रता प्राप्त होनी चाहिये।

यद्यपि साधारणतया रियासतें वही प्रतिगामी नीति बरत रही हैं, तथापि जिस प्रकार जमींदार, जो किसी समय प्रति-क्रियावादी थे, अब उचित समझौते के लिये तत्पर हैं उसी प्रकार देशी नरेश भी जल्दी ही रास्ते पर आ जायेंगे।

भारत के ६ प्राँतों में आज काँग्रेसी सरकारें हैं लेकिन वे अपना मसला हल करने के लिए दूसरे प्रांत से सहायता नहीं लेतीं। इसी तरह विभिन्न रियासतों को भी करना चाहिए।

काँग्रेस रियासतों की प्रजा को विश्वास दिलाती है कि समय पर जनता को मदद दी जायगी।

एक और शाही दल

श्री बलवन्त राम मेहता ने डा० पट्टाभि के प्रस्ताव का अनुमोदन करते हुए कहा कि रियासतों द्वारा आपसी संघ स्थापित करने की चेष्टा रियासती प्रजा के सहयोग के बगैर असफल सिद्ध होगी। उन्होंने कहा कि प्रतिक्रिया का सामना करने का सबसे अच्छा उपाय यह है कि रियासती प्रजा को काँग्रेसी ढंग पर संगठित किया जाय। प्रगति के मार्ग में देशी नरेश ही नहीं, पोलिटीकल विभाग भी रोड़े अटका रहा है, क्योंकि वह प्रजा और राजा में समझौता नहीं होने देता।

श्री अशोक मेहता (सोशलिस्ट) ने वह संशोधन पेश किया जो विषय समिति में श्रीमती अरुणा आसफअली ने पेश किया था। इस संशोधन में काश्मीर, त्रावनकोर और उन अन्य रियासतों की प्रजा को, जिनका दमन किया जा रहा है और जिन्होंने प्रतिरोध आँदोलन का संगठन किया है, नैतिक सहायता देने की बात कही गई थी।

श्री अशोक मेहता ने कहा कि जिस प्रकार अन्त-कालीन सरकार में लीगी दल शाही दल का काम दे रहा है, उसी प्रकार भारतीय नरेशों को भी शाही दल ही समझना चाहिए। इस समय हैदराबाद, काश्मीर और अन्य रियासतों की प्रजा संघर्ष के लिए तैयार है और कांग्रेस के आदेश की प्रतीक्षा कर रही है।

श्री अच्युत पटवर्धन ने श्री अशोक मेहता के संशोधन प्रस्ताव का समर्थन किया और कहा कि हम सरदार पटेल के इस कथन का कि अब लड़ाई अङ्गरेजों से नहीं है, समर्थन नहीं कर सकते। रियासतों की हालत ऐसी नहीं है कि वह कॉंग्रेस जैसी शक्तिशाली संस्था से लड़ सके। वह केवल अङ्गरेजों की सहायता से लड़ती हैं। यही बात लीग की है—वह केवल अङ्गरेजों की सहायता से ऐसा कर रही है। अङ्गरेजों को जिस जिस कठपुतली से सहायता मिलती है, वह सहायता लेते हैं।

सरदार पटेल जो कहते हैं कि हमारी क्रान्ति की लड़ाई कुत्ते की लड़ाई है तो मैं कहता हूँ कि ये कुत्ते भी भारत में ही पैदा हुए हैं। मैं कहता हूं कि हमारी लड़ाई अङ्गरेजों से है। हमें यह लड़ाई रियासतों में करनी चाहिए। रियासतों में प्रजामण्डल के कार्यकर्त्ता गिरफ्तार किये जा रहे हैं। काश्मीर और त्रावन्कोर में आँदोलन प्रारम्भ हो गया है। हैदराबाद में आन्दोलन इस लिए शुरू नहीं हो रहा है कि कॉंग्रेस इसकी इजाजत नहीं देती है। हम कहते हैं कि रियासतों में आन्दोलन छेड़ने का यही अवसर है।

स्पेन की लड़ाई में हमने प्रजातंत्रवादी सरकार को सहायता भेजी। हम कांग्रेस से अपील करते हैं कि वह ऐसा करे। आन्दोलन का उचित मोर्चा यही है।

यदि आज दंगे को रोकना है तो आत्मरक्षा का सबसे अच्छा तरीका प्रत्याक्रमण है और वह रियासतों में हो सकता है।

श्री ज्वालाप्रसाद ने एक और संशोधन पेश किया जिसमें उत्तरदायित्व पूर्ण शासन स्थापित करने की रियासती प्रजा की चेष्टा के साथ पूरी सहायता देने की बात थी।

श्री जोहरीमल भंडारिया ने मूल प्रस्ताव का समर्थन करते हुए कहा कि विधान परिषद में देशी प्रजा के प्रतिनिधि भी हों।

चौधरी धारासिंह ने मूल प्रस्ताव का समर्थन करते हुए देशी रियासतों को कोचीन का अनुकरण करने की सलाह दी।

इस प्रकार विरोध करने वाले वक्ताओं ने नेहरूजी को अपना विचार प्रकट करने के लिये बाध्य कर दिया। नेहरू जी ने कहा कि विरोधी कहते हैं कि काँग्रेस को रियासतों से हमदर्दी होनी चाहिए। ऐसा कहने वाले काँग्रेस का इतिहास जानते ही नहीं हैं। यह धोखेबाजी है। क्या काँग्रेस रियासतों की उपेक्षा करती है? वे काँग्रेस का इतिहास जानते नहीं हैं और लम्बी लम्बी तकरीर करते हैं। श्री अच्युत पटवर्धन कहते हैं कि स्पेन से तो काँग्रेस की सहानुभूति है, लेकिन रियासतों से नहीं। क्या अजीब बात है? हाँ, प्रजामण्डल को काँग्रेस से मिलाया जाय या नहीं इसमें भले ही मतभेद हो सकता है।

"अजीब अजीब संशोधन प्रस्ताव पेश हुए हैं। एक संशोधन प्रस्ताव में कहा गया है कि काँग्रेस काश्मीर और ट्रावन्कोर के मामले में दखल दे। काँग्रेस कार्य समिति ने काश्मीर के सम्बन्ध में प्रस्ताव स्वीकृत किया है। काश्मीर के मामले में काँग्रेस हस्तक्षेप जरूर कर रही है। फिर भी जिम्मेदारी की हद होती है। काँग्रेस या और भी कोई जिम्मेदार संस्था ऐसा प्रस्ताव नहीं पास कर सकती कि हर हड़ताल में सहायता दी जाय।

"यह भी आज एक वक्ता ने कहा है कि हैदराबाद की जनता को आन्दोलन करने से रोक दिया गया है। ठीक है और गलत भी। मैंने हैदराबाद वालों को सलाह दी है कि वर्तमान समय में सत्याग्रह करना उचित नहीं है लेकिन यदि करना ही चाहो

तो करो। कुछ दिन चलाकर देखो। ऐसी चीज प्रस्ताव में नहीं ला सकते।"

ये जो संशोधन प्रस्ताव पेश किये गये हैं उन्हें गलत नहीं कहा जा सकता, लेकिन वे नामुनासिब हैं। काँग्रेस जिम्मेदार संस्था है; जो वह कहेगी उसे करने का भी उत्तरदायित्व उस पर रहता है।

"श्री पटवर्धन ने कहा है कि लड़ाई अङ्गरेजों से है। मैं कहूँगा कि लड़ाई न तो अङ्गरेज से है और न रियासत से ये अङ्गरेज क्या हैं? क्या ये कंजरवेटिव दल हैं, भारत मंत्री हैं या मजदूर दल हैं? हाँ अङ्गरेजी हुकूमत की जो नीति है वह प्रतिक्रियावादी है। हिन्दुस्तान की सबसे बड़ी प्रतिक्रियावादी नीति रियासतों की है इसलिए वे एक दूसरे का सहारा लेते हैं। हमें काली ताकत-प्रतिक्रियावादी ताकत का मुकाबला करना है।

"कुछ संशोधन तो ठीक नहीं है और कुछ काँग्रेस की शान। के खिलाफ है। इसलिए मैं प्रस्ताव का समर्थन करता हूँ।"

तीनों-संशोधन प्रस्ताव भारी बहुमत से अस्वीकृत हुए। इस तरह मुख्य प्रस्ताव स्वीकृत हो गया। विरोध में केवल एक मत आया।

घोषणापत्र

श्री जयप्रकाश नारायण ने घोषणापत्र सम्बन्धी प्रस्ताव पेश किया प्रस्ताव निम्नलिखित है—

"काँग्रेस की चुनाव विज्ञप्ति में स्वराज्य का जो अर्थ सन्निहित है उसमें निर्धारित सिद्धाँत तथा कार्य-क्रम को यह अधिवेशन

स्वीकार करता है। इस काँग्रेस की राय में जनता के लिए असली स्वराज्य तभी होगा जब देश में ऐसे समाज की रचना हो जिसमें प्रजातंत्रात्मक सत्ता का विस्तार राजनैतिक ही नहीं सामाजिक तथा आर्थिक क्षेत्र में भी हो जिससे विशेष अधिकार प्राप्त वर्ग को जनसमूह के शोषण की गुंजाइश न हो और न वर्तमान घोर असमानता ही रह जाये। ऐसे समाज में व्यक्तिगत स्वतंत्रता के विकास के क्षेत्र तथा साधनों की समानता होगी और हर एक नागरिक को अपने व्यक्तित्व के विकाश का पूर्ण अवसर प्राप्त होगा।

प्रस्ताव पर बोलते हुए श्री जयप्रकाश नारायण ने कहा—

"इस प्रस्ताव के पेश करने में खतरा हो सकता है कि लोग कहें कि इस तरह के प्रस्ताव पेश करने का अर्थ यह है कि समाजवादी दल कमजोर हो गया है। मैं इसकाउत्तर दे सकता हूँ।

आजादी के सवाल के बाद दूसरा महत्वपूर्ण प्रश्न वही है जो इस प्रस्ताव में रखा गया है। अब समय आ गया है कि भारत के भविष्य के नक्शे पर सोच विचार किया जाय।

"मैं तो राष्ट्रपति जी से प्रार्थना करता हूं कि वह जल्दी से जल्दी काँग्रेस महा समिति की बैठक बुलायें और ७ दिन तक की तैयारी से बुलायें और फैसला करें कि हमें कैसा स्वराज्य चाहिये स्वराज्य का नक्शा कैसा हो इसपर सोचनेका काम विधान परिषद् का काम है ऐसी बात नहीं है। मैं तो कहूंगा कि महा समिति ही देश की वास्तविक सबसे बड़ी प्रतिनिधि सभा है, अतः यही विधान परिषद है। उस सभा में १०-१५ बुनियादी उसूलों को को तय करना चाहिए।

सर्वाङ्गीण लोकतन्त्र

आगे चल कर श्री जयप्रकाश नारायण ने कहा—

"हम भारतीय लोकतन्त्र को आर्थिक और सामाजिक लोकतन्त्र बनाना चाहते हैं। केवल राजनीतिक लोकतन्त्र से ही कोई लाभ नहीं होगा। राष्ट्रपति ने कहा है कि लोगों को वोट देने के अधिकार दे देने से लोगों का पेट नहीं भर जाता। हम ऐसी संस्था कायम नहीं करना चाहते। आज ऐसे समाज की आवश्यकता है कि जिसे राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक स्वतन्त्रता प्राप्त हो।

"आज दो विचार धारायें हैं—(१) समाजवाद और (२) गाँधीवादी। समाजवाद बुनियादी सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था कायम करना चाहते हैं। लोगों को संदेह होता है और ठीक भी है कि न मालूम यह समाजवाद सरकार क्या करेगी, क्योंकि कई देशों में समाजवादी सरकार कुछ अजीब काम कर रही है (इशारा ब्रिटेन की सरकार से है)। दूसरी विचारधारा गाँधीवाद से लोग उसके विकेन्द्रीकरण के सिद्धान्त से घबराते हैं। इस प्रस्ताव में दोनों विचार धाराओं का सुन्दर सम्मिश्रण है।

"समाजवादी कहेंगे कि सभी बड़े उद्योगों का राष्ट्रीकरण हो। कुछ लोग कह सकते हैं कि सभी शासनाधिकार एक के हाथ में आजाने से वह सत्ता के मद्द में आ जायेगा। यह भी ठीक ही है। इस पर हम भी सोचेंगे। मैं इतना अवश्य चाहता हूँ कि कई उद्योग धन्धे छोटे छोटे गाँवों और सहकारी संस्थाओं के हाथ में रहे। हम ये सब अधिकार थोड़े से पूंजीपतियों के हाथ में नहीं रहने देना चाहते।"

प्रो० रंगा ने इस प्रस्ताव का समर्थन करते हुए कहा कि यह प्रस्ताव न तो मास्को के सिद्धान्तों के आधार पर है और न लन्दन के। इसमें भारत की नई योजना पेश की गयी है। यह गाँधी जी के सन् १९२० से लेकर अब तक की कार्रवाई का परिणाम है। यह घोषणा पत्र बहुत प्रगतिशील है। यूरोप में मुझसे पूछा जाता है कि भारत की अपनी कौन सी योजना है, जिसे वह स्वतन्त्र होने पर कार्यान्वित करेगा। मैं उन्हें बताया करता था कि हम अपने समाज की योजना इस ढङ्ग से करेंगे जैसा यूरोप में नहीं है और मैं इसी तरह की योजना पेश किया करता था जैसी इस योजना में है।

श्री मथुरा प्रसाद मिश्र ने एक संशोधन प्रस्ताव पेश किया किन्तु बाद में वापस ले लिया।

'वाद' के चक्कर में न फँसिये

श्री शंकरराव देव ने भाषण देते हुए कहा कि इस प्रस्ताव में समाजवाद या गाँधीवाद या अन्य कोई भी 'वाद' नहीं है। जो यह कहते हैं कि इसमें समाजवाद और गाँधीवाद का सम्मिश्रण है वे गलती पर हैं, क्योंकि गाँधीवाद नाम की कोई चीज नहीं है। गाँधी जी कहते हैं कि जब कोई एक वाद में फँस जाता है तब वह आगे नहीं बढ़ सकता। गाँधी जी कहते हैं कि मैं एक काम कर रहा हूँ और वह है 'सत्य की खोज'। गाँधी जी ने इसके लिए अपनी जिन्दगी दे दी है।

जयप्रकाश बाबू ने एक छोटा-सा संशोधन, जिससे प्रस्ताव में कोई अन्तर नहीं पड़ता था, स्वीकार कर लिया और प्रस्ताव सर्व सम्मति से स्वीकार कर लिया गया।

साम्प्रदायिक झगड़े

इसके पश्चात् साम्प्रदायिक झगड़े वाले प्रस्ताव की बारी आई। प्रस्ताव के उपस्थित किये जाने से पहले आचार्य कृपलानी ने चेतावनी देते हुए कहा कि इस प्रस्ताव पर बोलते समय हमें पूर्ण संयम से काम लेना चाहिए और अपने भाषणों में मुसलमान तथा मुस्लिम लीग में साफ-साफ अन्तर करना चाहिए।

प्रस्ताव उपस्थित करते हुए डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद ने कहा कि इस समय मैं ऐसी कोई बात नहीं करना चाहता ताकि और उलझन बढ़ जाय। आखिर इन्सान को इन्सानियत नहीं भूलनी चाहिए। औरतों और बच्चों के साथ जो ज्यादतियाँ की गई हैं वे सहन नहीं की जा सकतीं। इस तरह के वाकयात को रोकना हमारा फर्ज है। संसार को हम ऐसा नहीं प्रदर्शन करना चाहते कि भारतीयों में इन्सानियत नहीं है।

इस तरहके वाकयात का नतीजा बुरा होगा। हर एक गाँव में हिन्दू और मुसलमान रहते हैं और रहेंगे। यदि वे एक दूसरे से डरते रहेंगे तो जिन्दगी कड़वी हो जायगी। इसे रोकना जरूरी है।

इसे कैसे रोका जाय? यह दो तरह से हो सकता है—(१) घृणा का प्रचार रोक कर और (२) अहिंसा की नीति पर दृढ़ रह कर। हमने पिछले २५ वर्षों में ब्रिटिश सरकार से कई बार मर्चा लिया है और अहिंसा हमारा सबसे बड़ा अस्त्र रहा है। अहिंसा जैसे शक्तिशाली अस्त्र से ही हम इतने आगे बढ़ सके हैं। हम जब अपने दुश्मन के साथ लड़ने में अपने सिद्धान्त की रक्षा कर सके वह आज आपसी झगड़े में नष्ट होने वाला है।

लेकिन अब भी बहुत खराबियाँ नहीं हुई हैं। हालत अब भी सम्हाली जा सकती है। हैवान भी एक स्थान का बदला दूसरे स्थान में नहीं लेता है। जङ्गली जानवर भी ऐसा नहीं करता। इन्सान ही ऐसा जानवर है जो एक जगह के कसूर का बदला दूसरी जगह लेता है। हमें इसे रोकना है एक गलती को सुधारने का तरीका दूसरी जगह गलती करना नहीं है। इससे दिनों दिन बात बिगड़ती जा रही है। जहाँ अधिक हिन्दू हैं वे मुसलमानों की हिफाजत करें और जहाँ अधिक मुसलमान हैं वे हिन्दुओं की हिफाजत करें। आज काँग्रेस के सामने यही सब से महत्वपूर्ण प्रोग्राम है, क्योंकि जब अमन चैन नहीं होगा तब कोई काम नहीं हो सकता।

कांग्रेस की अग्नि परीक्षा

मौलाना अबुल कलाम आजाद ने प्रस्ताव का समर्थन किया। एक ओजस्वी भाषण देते हुए उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि काँग्रेस फिरकेवाराना झगड़ों को दूर करने का काम अपने हाथ में ले, क्योंकि वही एक ऐसी जमात है जो सारे मुल्क की नुमाइन्दगी करती है। मौलाना साहब ने कहा—

"फिरकेवारान झगड़े की बीमारी पहले भी थी, लेकिन अब वह एक बवा बन गई है और सारे मुल्क में फैलने लगी है। इसलिए यह मसला हमें वहां ले जाकर खड़ा कर देता है जहां कांग्रेस के मरने और जीने का सवाल आ जाता है। कांग्रेस के लिए यह एक भारी आजमाइश का जमाना है और उसे यह फैसला करना है कि वह इस आजमाइश में कामयाब होती है या नहीं।

आज जो सैलाब आया हुआ है, आज जो बवा फैली हुई है उसका इलाज वही है जो ३० या १५ साल पहले हो सकता था। वह इलाज है इंडियन नेशनल कांग्रेस। कांग्रेस का एक ऐसा जाल है जिसमें मुल्क का गोशागोशा आ गया है। वह हिन्दू की या मुसलमान की नहीं है, वह सारे मुल्क की है। इसलिए अगर इस वक्त वह किसी तरह की बेबसी दिखाती है तो समझना चाहिए कि उसकी मौत की घड़ी आ गई।

पहले अपना दिमाग़ टटोलिये

"सबसे पहले हमें चाहिए कि हम अपने दिमागों को टटोलें। क्या हम पर इस बवा का असर तो नहीं हो रहा है? अगर ऐसा है तो हम खत्म हो लिये। हिन्दुओं और मुसलमानों की अलग अलग जमातें जो करेंगी अपनी फिरकावाराना हद के अन्दर रह कर ही करेंगी, लेकिन कांग्रेस ऐसा नहीं कर सकती। वह सबके लिए है। इसलिए उसे आग में कूदना होगा, सैलाबमें कूदना होगा, और इस नजर से देखना होगा कि चाहे हिन्दू हो चाहे मुसलमान, दोनों ही एक मुल्क के हैं, वह उनमें बंटवारा नहीं कर सकती, उसे दोनों को एक समझना होगा। उसके पास जो तराजू है उसमें वह हिन्दू को नहीं तौलती, मुसलमान को नहीं तौलती बल्कि हिन्दुस्तानी को तौलती है।"

आगे चल कर मौलाना आजाद ने कहा—हालत खौफ नाक है, फिर भी इलाज हमारे हाथ में है और मुझे यकीन है कि हमारे उस हाथ में इतनी ताकत है कि वह एक उंगली उठाकर इस सैलाब को रोक देगी। हमारा निजाम सिर्फ शहरों में नहीं है, वह एक एक देहात में फैला हुआ है। फिर हम मायूस क्यों हों? बेबस क्यों हों? सैलाब को ईंट नहीं रोक

सकती, उंगलियों की तो बात क्या ? लेकिन ऐसी भी उंगलियां होती हैं जो सैलाब को रोक देती हैं और वह उंगली है सही फैसले की।"

कांग्रेस की शान रखनी चाहिए

पंडित जवाहरलाल नेहरू ने इस प्रस्ताव का समर्थन करते हुए कहा—

"स्वराज्य या आजादी बेमानी है अगर उसमें तहज़ीब, सभ्यता या संस्कृति नहीं। हमने दावा किया था कि हम सारे मुल्क के नुमाइंदा हैं और हम सारे मुल्क को काबू में कर लेंगे। चाहे किसी की वजह से हुआ हो मुल्क काबू से बाहर निकला झगड़े हुए, खून बहे। हम झगड़े से नहीं डरते, हम मौत से नहीं डरते। यही कांग्रेस की शान रही है और यही रहनी चाहिए। हमें उसकी यह शान रखनी होगी।"

मुस्लिम लीग और हिटलर की तुलना करते हुए नेहरूजी ने कहा—"मुस्लिम लीग का बढ़ना वैसा ही है जैसा हिटलर का बढ़ना था। यहां के मुस्लिम लीग के लीडरान ने हिटलर की हूबहू नकल करने की कोशिश की। इस कोशिश की जड़ में थी नफरत, तशद्दुद। फर्क सिर्फ इतना है कि जर्मनी में कोशिश बड़े पैमाने पर हुई, यहां छोटे पैमाने पर। लीग ने कभी कोई तामीरी प्रोग्राम सामने नहीं रखा, क्योंकि ऐसा करने से उस पर बहस होती और लीगी नेताओं में इतनी जुरत कहां जो झगड़े में पड़ते। एक दफा एक साहब ने मिस्टर जिन्ना से कहा भी कि आप क्यों नहीं कोई तामीरी प्रोग्राम रखते, तो उन्होंने कहा कि इससे आपस में झगड़ा बढ़ेगा। इसलिए उन्होंने नफरत का प्रोग्राम रखा ताकि उसकी मुखालफत ही न हो सके।

फासिज्म हमारा शत्रु

"मैं कहना चाहता हूँ कि लीग के इस फासिज्म को देखकर हिन्दुओं में भी ऐसी ही भावना पैदा होती जा रही है। वे फासिज्म का फासिज्म से जबाब देना चाहते हैं। फाशिज्म धर्म के नाम पर जनता को बहकाना है। इसलिए हमें दोनों फाशिज्मों का मुकाबला करना है। हम घबराये हुये दिमाग से हिन्दुस्तान का इतिहास नहीं लिख सकते। हमें दिमाग ठीक रखने की जरूरत है। असल दुश्मन हैं फासिज्म—वह फासिज्म जो लीग में हैं और जो अब और जगह भी दिखाई देने लगी है।

खान अब्दुल गफ्फार खां ने प्रस्ताव का समर्थन करते हुए कहा—

"जो कुछ हुआ बुरा हुआ। यह बात किसी धर्म की बात नहीं है। मैं यह भी कहूँगा कि यह काम किसी बहादुर आदमी का भी काम नहीं है। छोटे छोटे बच्चों को मारना औरतों को मारना, घरों में आग लगाना, यह सब काम हरगिज बहादुरी का काम नहीं है"।

अहिंसा की विजय

सरहदी सूबे की चर्चा करते हुए बादशाह खान ने कहा कि वह सूबा इस आग से सिर्फ इसलिये बचा रहा है कि वहां अदम तशद्दुद का राज है। वहां लोगों को समझा दिया है कि हमारा मुकाबला काँग्रेस और लीग के बीच नहीं है, बल्कि हमारे और अङ्ग्रेज के बीच है। जितनी कोशिश हमारे सूबे में फिरकावाराना आग भड़काने की कीगइ उतनी न अङ्ग्रेज ने की होगी, न लीग ने। लेकिन हमारी कोशिश उनसे ज्यादा रही, वहां अदम तशद्दुद की जीत हुई।

विधान-परिवर्तन

इसके पश्चात सभापति कृपलानी ने यह प्रस्ताव उपस्थिति किया कि कांग्रेस विधान-परिवर्तन के सम्बन्ध में जो प्रस्ताव कार्य-समिति ने स्वीकार किया था वह कार्य-समिति के विचारार्थ छोड़ दिया जाय। प्रस्ताव सर्व सम्मति से स्वीकृत हो गया।

अन्त में पंडित गोविन्द वल्लभ पंत ने अधिवेशन की सफलता की चर्चा की और कहा कि ऐसी साम्प्रदायिक विषमता की स्थिति में हमने कॉंग्रेस का अधिवेशन नियत समय पर करके जनता में विश्वास और सुरक्षा की भावना फैला दी है।

पंतजी ने गढ़मुक्तेश्वर आदि के दंगों की भी चर्चा की और घटनाओं पर खेद प्रकट करते हुये कहा कि समस्त मेरठ जिले में साम्प्रदायिक दंगों में मारे गये व्यक्तियों की संख्या ४५० से अधिक नहीं है। पंतजी ने आशा प्रकट की कि कांग्रेस का आगामी अधिवेशन स्वतंत्रभारत में होगा।

इसके पश्चात "बन्दे मातरम्" की वंदना हुई और आजाद हिन्द फौज के बैंड के सुखद घोष के साथ अधिवेशन समाप्त हो गया।

अधिवेशन के अन्त में

कृपलानी जी—

मेरठ २४ नवम्बर। कांग्रेस अधिवेशन में अध्यक्ष पद से अन्तिम भाषण देते हुए आचार्य कृपलानी ने एक बार फिर साम्प्रदायिक एकता की अपील की। आपने कहा—मैंने आपको बताया और उसे फिर दोहराता हूं कि हम लोग हिन्दू, मुसलमान, पारसी, ईसाई या किसी और धर्म के मानने वाले हों, इस देश को नहीं छोड़ सकते। कोई अन्य ऐसा देश नहीं जिसे हम अपना कह सकें। हम सबको एक साथ यहां रहना है। क्यों न हम शान्ति पूर्वक और भ्रातृभाव से रहें। यदि हम ऐसे नहीं रहेंगे तो अनेक मुसीबतें उठाने के बाद कुदरत हमें ऐसा बनने के लिये विवश कर देगी। जिनको भगवान ने जोड़ा है उन्हें कोई जुदा नहीं कर सकता। यदि कोई हिन्दू किसी मुसमान को नाराज करता है तो वह अपनी जाति और देश के साथ अन्याय करता है और यदि कोई मुसलमान किसी हिन्दू को नाराज करता है तो वह अपने धर्म और देश की आजादी को भारी ठेस पहुंचाता है।

आपने उग्रपन्थी मित्रों को सम्बोधित करते हुए आचार्य कृपलानी ने कहा—"मैंने अहिंसा गांधी जी से सीखी है। मुझे

आपको यह बताने में संकोच नहीं है कि मैं पहले हिंसा में विश्वास रखता था और १६०६ तथा १६०७ में क्रान्तिकारी दल में शामिल था। अपने क्रांतिकारी जीवन में भी मैं अपने आपको एक बहादुर आदमी समझता और फांसी पर चढ़ने में भी संकोच नहीं करता था मगर मैंने अपने आपको कभी भी इतना निर्भय, बहादुर और बलवान महसूस नहीं किया जितना कि महात्मा गांधी से अहिंसा का सिद्धान्त सीखने के बाद अपने आपको मानता हूं।

यदि इस देश को ऊपर उठना है तो वह अहिंसा के द्वारा ही उठ सकता है, किसी अन्य तरीके से नहीं। हम सामाजिक राजनीतिक और आर्थिक—कितने ही ऐसे दलों में बंटे हुए हैं कि यदि हम विदेशी शत्रु के विरुद्ध हिंसा का प्रयोग करते हैं तो हम निश्चित रूप से एक दूसरे के विरुद्ध करते हैं। जो लोग तलवार के बल पर जीवित हैं वे तलवार से ही मरते हैं। संसार ने अणुबम का आविष्कार किया है, परन्तु इससे भी अधिक कोई भयंकर चीज निकलेगी यदि लोगों ने जो अब तक हुआ है उस पर विचार न किया। मैं लोगों की इसलिये निन्दा नहीं करता कि वे हिंसा से काम लेते हैं। अहिंसा एक नया सिद्धान्त है, परन्तु इसे आपके सामने अवश्य रखना चाहता हूं, क्योंकि मैं हिंसा और अहिंसा दोनों को आजमा कर यह परिणाम निकाल चुका हूं कि अहिंसा हिंसा से बढ़कर है। यदि आप असत्य और कमीनी कूटनीति के द्वारा अपनी समस्याएं हल करना चाहेंगे तो संसार की समस्याएं कभी हल नहीं होंगी। संक्षेप में समाजवाद और गांधीवाद में अन्तर यही है कि गांधी

जी कहते हैं कि आपके ध्येय जितने उच्च हैं उतने ही पवित्र और स्वच्छ उन तक पहुंचना चाहिये। कमीने उपायों से उच्च आदर्शों की पूर्ति नहीं हो सकती है। पश्चिमी समाजवाद और इस बूढ़े बनिये के पूर्वी समाजवाद में भी सारांशतः यही अन्तर है।

जब तक इस सिद्धान्त को स्वीकार नहीं किया जायगा तब तक संसार लड़ाई-झगड़ों और रक्तपात से मुक्त नहीं हो सकता। आप चाहे आज या कल एक सदी बाद इसे स्वीकार करें, परन्तु यह याद रखें कि वह सदी मानव समाज के लिए बहुत कष्टदायक होगी।

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस का नाम कांग्रेस के शोक प्रस्ताव में न जोड़ने का कारण बताते हुए आचार्य कृपलानी ने कहा "कोई भी अखिल भारतीय नेता को किसी पार्टी विशेष का नेता बनाने का प्रयास न करें। सुभाष बोस फारवर्ड ब्लाक या आजाद हिन्द फौज या गरम दल या किसी और दल से संबंध नहीं रखते। उनका सम्बन्ध सारे हिन्दुस्तान से है जिसके लिये उन्होंने काम किया और जिसके लिये वे अभी तक जीवित हैं बम्बई में मुझसे आजाद हिन्द फौज के बारे में बोलने के लिये कहा गया। मैंने कहा यदि अहिंसा के सिद्धांत मानने वाला न होता तो मैं भी बिल्कुल वैसे ही करता जैसा कि सुभाष बाबू ने किया। मुझे उस पर शर्म नहीं बल्कि गर्व होता। मैं यह सोचता कि मैंने देश की सबसे बड़ी सेवा की है और यह कहता कि मैंने वही काम किया है जैसा कि इतिहास के बहुत से महान पुरुषों ने किया।

जेलखाने से जोकि हिन्दुस्तान है, भाग कर जाना और वहां

देश की आज़ादी के लिये एक विशाल संगठन तैयार करना एक ऐसी जबर्दस्त सेवा है जो कि कोई बिरला ही कर सकता है।

कवि सम्मेलन और

मुशायरा

रविवार की रात को अधिवेशन समाप्त होने के बाद ९॥ बजे से मुख्य पंडाल और मंच पर श्रीमती कमला चौधरी और श्री विश्वम्भर सहाय प्रेमी के प्रयत्न से बा० सम्पूर्णानन्दजी शिक्षा मन्त्री युक्त प्रांत के सभापतित्व में एक शानदार कवि सम्मेलन और मुशायरा हुआ। जिसमें राष्ट्र के भिन्न भिन्न भागों से आये हुये राष्ट्रीय कवियों का ओजस्वी कवितायें भिन्न भिन्न भाषाओं में हुईं। यह सम्मेलन अत्यन्त सफल रहा सभापति महोदय बीच में आवश्यक कार्य से उठकर चले गये तो, सहगल साहब के सभापतित्व मे होता रहा और जब सहगल साहब और सयोजकों ने भी थककर १॥ बजे समाप्त होने की घोषणा करदी तो जनता ने स्वयं बैठकर कवितायें सुनी और इस प्रकार न चाहते हुये भी रात को २॥ बजे तक यह शानदार मुशायरा होता रहा।

अधिवेशन समाप्ति पर झण्डा सलामी

सोमवार को प्रातःकाल ६ बजे, आजाद हिन्द फौज, सेवा-दल, लाल कुर्तीदल और स्वयं सेविकाओं के परेड और आजाद हिन्द बैंड के साथ झण्डे की सलामी हुई। झण्डा गान और वन्दना के बाद राष्ट्र पति कृपलानी का ओजस्वी भाषण हुआ।

आजाद हिन्द फौज की परेड़

देश को प्रथम बार अपनी राष्ट्रीय सेना आजाद हिन्द फौज की परेड और बैण्ड देखने का अवसर प्राप्त हुआ। यह सब कुछ इतना शानदार था कि मस्तक गर्व से ऊंचा हो जाता था, हृदय उल्लास से भर जाता था और मन में देश भक्ति की उमंगें उठती थीं। वास्तव में ही नेताजी ने बिना साधनों के भी यह फौज खड़ी करके जो कुछ हमारे लिये किया वह इतिहास में अमर रहेगा।

॥ जयहिन्द ॥

समाप्त

हमारी सामयिक नई

पुस्तकें

हिन्दूराष्ट्र के पितामह स्वर्गीय

पं० मदनमोहन मालवीय

(ले० श्री कौशल प्रसाद जैन)

हिन्दी भाषा भाषी आज कौन ऐसा हिन्दू है जो पं० मदन-मोहन मालवीय जी के नाम और उनके कार्यों से परिचित नहीं हैं उनका सारा जीवन हिन्दू संस्कृति की रक्षा करने हिन्दी का प्रचार करने और राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम में लड़ते बीता है। उनके जीवन का एक एक दिन हम लोगों के लिए आदर्श रूप है हमारे बच्चों के लिए शिक्षाप्रद है, इसी आवश्यकता की पूर्ति के लिए यह उनका संक्षिप्त जीवन चरित्र एकत्रित किया गया है जिसमें हिन्दू यूनिवर्सिटी बनारस की स्थापना और बढ़ने का पूरा हाल, लीडर, भारत, अभ्युदय, हिन्दुस्तान, हिन्दुस्तान टाईम्स आदि पत्रों की स्थापना, सनातन धर्म सभा, सनातन धर्म मण्डल की स्थापना आदि प्रमुख घटनाएं रोमांचकारी ढंग से लिखी गई हैं पुस्तक हर हिन्दू के लिए संग्रहणीय है। मूल्य केवल ॥)

तीसरा एडीसन

बंगाल में हिन्दू संस्कृति के नाश का प्रयत्न

(ले० श्री कौशलप्रसाद जैन)

पाठकों को आज यह प्रकट करते हुए हमें प्रसनन्ता हो रही है कि पुस्तक का तीसरा एडीसन छपकर तैयार हो गया है। यह पुस्तक किस प्रकार १५ दिन में ही दो एडीसनों में हाथों उठ गई है यह लिखने की आवश्यकता नहीं है, उन दुकानदारों को इसका अन्दाजा है कि किस प्रकार उन्हें कभी मांग से आधी और कभी बिलकुल प्राप्त नहीं हुई और उनके पास किस प्रकार इस पुस्तक की मांग रही है।

इस पुस्तक में पूर्वी बंगाल का नरमेध यज्ञ, राष्ट्रपति आचार्य कृपलानी, युक्त प्रान्तीय असेम्बली के स्पीकर बा० पुरुषोत्तम दास टंडन, अन्तःकालीन सरकार के पूर्व सदस्य कांग्रेस वर्किंग कमेटी के सदस्य श्री० शरतचन्द्र बोस डा० श्यामाप्रसाद मुकर्जी के वक्तव्य दिये गये हैं अन्त में हिन्दू राष्ट्र के वृद्ध पितामह स्वर्गीय पं० मदनमोहन मालवीय की हिन्दू संगठन के लिए अपील दी गई है। साथ ही मुस्लिम लीग का गुप्त एक्शन डे प्रोग्राम भी गया छापा है। ६४ पृष्ठकी पुस्तक दोरंगा टाइटल दाम केवल ।।)

हिन्दू राष्ट्र के लिए हमारी नई भेंट—

क्या बिहार उपद्रव के लिए हिन्दू जिम्मेदार हैं ?

"बंगाल में हिन्दू संस्कृति के नाश का प्रयत्न" नामक पुस्तक के यशस्वी लेखक और हिन्दी संसार के परिचित श्री कौशल प्रसाद जैन की हिन्दू राष्ट्र को नई भेंट है। हमारे पाठक और दुकानदार श्री कौशल प्रसाद जी की लौह लेखनी से और उनकी निर्भीकता से भली भांति परिचित हैं। हिन्दी में इस समय केवल यही एक ऐसे लेखक हैं जो सबसे पहले सामायिक पुस्तकें निस्संकोच जनता के सामने डाल देते हैं।

इस पुस्तक में पं० जवाहरलाल नेहरू डा० राजेन्द्र प्रसाद बिहार के प्रधान मन्त्री श्री सिनहा तथा राष्ट्रपति आचार्य पक्र ज्ञानी और बिहार सरकार की विज्ञप्तियां देकर यह भली भांति सिद्ध कर दिया गया है कि बिहार के उपद्रव के लिए हिन्दू जिम्मेदार नहीं है। पुस्तक "बंगाल में हिन्दू संस्कृति के नाश का प्रयत्न" की तरह रोचक और ओजस्वी भाषा में लिखी गई है। मूल्य केवल ॥)